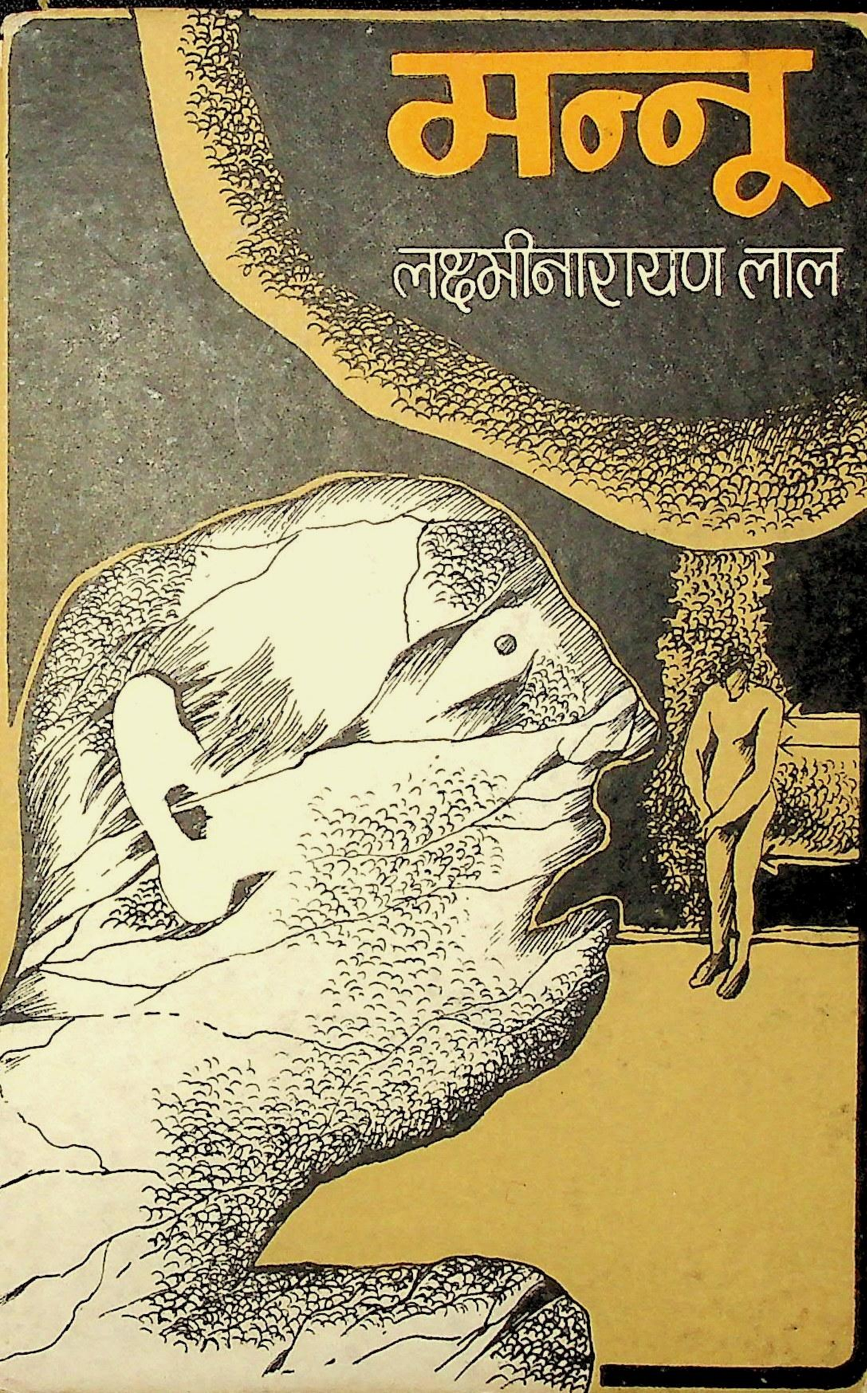
मन्नू

लक्ष्मीनारायण लाल



मन्नू

मन्नू

पता :

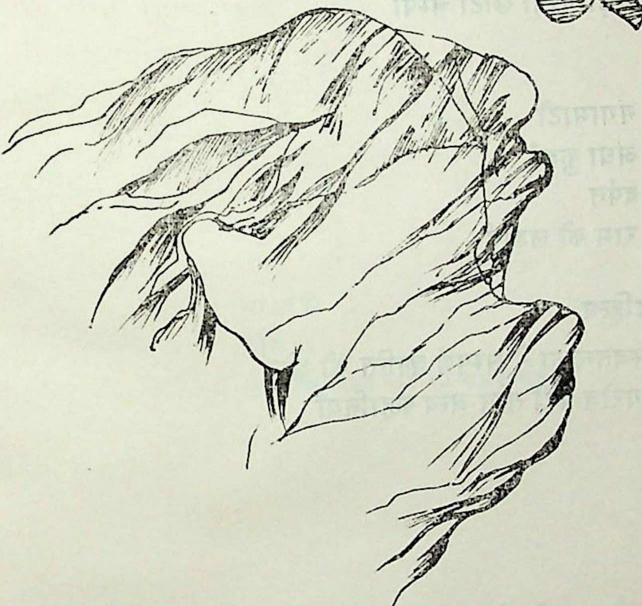
54 A, M. I. G. Flats,
A-2, Paschim Vihar,
New Delhi-110063

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक

८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,
नई दिल्ली-११०००५. (भारत)

मन्नू



लक्ष्मीनारायण लाल

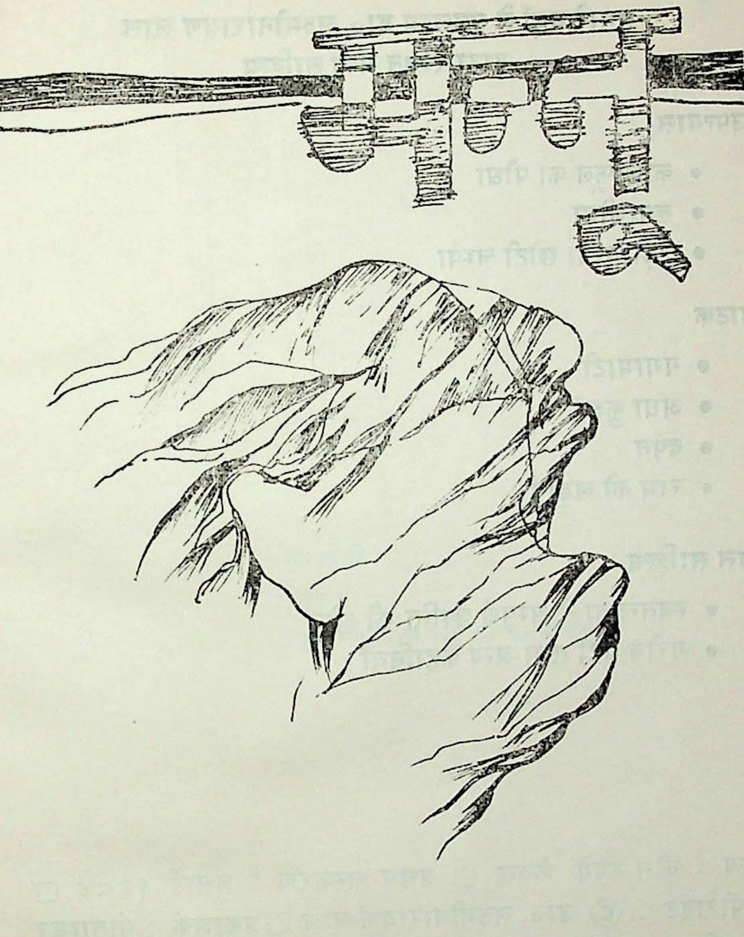
मन्नू

पता :

54 A, M. I. G. Flats,
A-2, Paschim Vihar,
New Delhi-110063

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक
८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,
नई दिल्ली-११०००५. (भारत)



लक्ष्मीनारायण लाल

हमारे यहाँ से उपलब्ध डा० लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित अन्य साहित्य

उपन्यास

- काले फूल का पौधा
- रूपाजीवा
- बड़ी चम्पा छोटी चम्पा

नाटक

- गंगामाटी
- अंधा कुआँ
- दर्पन
- राम की लड़ाई

बाल साहित्य

- स्वतन्त्रता से सम्पूर्ण क्रान्ति की ओर
- गरीब परी तथा अन्य कहानियाँ

मूल्य : बीस रुपये केवल □ प्रथम संस्करण : जुलाई १९८४ □

□ प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़, नई दिल्ली-११०००५. (भारत), दूरभाष : (कार्यालय) ५२६९३३, ५१९४३३, (आवास) ५६२९१९, ५६१३२१ □ मुद्रक : मित्तल प्रिण्टर्स, के-१३, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

MANNU : Lakshmi Narain Lal Rs. 20/-

सरस्वती

और

विश्वम्भरनाथ पांडे को सप्रेम भेंट

प्रस्तावना

आजकल आधुनिक रंगमंच के नाम से जो कुछ भारतवर्ष में है, मैं निःसंकोच लिखकर कह रहा हूँ, कि यह सब कुछ पश्चिम की बैसाखियों पर खड़ा है। पूरा पश्चिम पर भी नहीं। पश्चिम की पूरी नकल भी नहीं। इस प्रसंग में नाटककार के रूप में केवल रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नाटकों को भारतीय कहा जा सकता है।

यह निर्विवादतः सत्य है, कि जो आधुनिक है, वह स्वभावतः पश्चिम का है। रंगमंच के अपने सन्दर्भों में जो भारतीय है, अर्थात् जो हमारी परम्परा है, उसकी वैज्ञानिक खोज, जाँच-पड़ताल, अनुसन्धान किये बिना हमें कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।

अपनी-अपनी रंग परम्परा का यह वैज्ञानिक अनुसन्धान रूस में स्टेन्सलाव्स्की ने किया है, जर्मनी में ब्रेख्त ने, पोलैण्ड में ग्रोटोवस्की ने। पीटर ब्रुक ग्रोटोवस्की से प्रेरणा लेकर यही अनुसन्धान कर रहा है। यह अनुसन्धान इंग्लैण्ड में नहीं हो रहा है। यह अनुसन्धान भारतवर्ष में भी नहीं हुआ।

भारतवर्ष आधुनिक इंग्लैण्ड का उपनिवेश रहा है। वर्तमान भारतवर्ष अपनी आज़ादी के बावजूद उसी इंग्लैण्ड का सांस्कृतिक उपनिवेश बन कर आज किसी तरह सांसें ले रहा है। सांसें इसलिए, कि 1835 से लेकर आज तक जिस गुलामी और शोषण में भारतवर्ष रहा है, उसमें अब इतनी भी शक्ति शेष नहीं रही है कि वह नकल तक कर सके। नकल करने के लिए भी अकल चाहिए, यह हमारे यहाँ का लोक मुहावरा है।

भारतवर्ष का गत दो हज़ार वर्षों का जो जीवन इतिहास रहा है, उसके ढेर और मलबे के नीचे भारतवर्ष का अपना रंगमंच ढूंढ़ना, तलाशना और वैज्ञानिक अनुसन्धान करना, इतना सरल काम नहीं है। नाट्य-रंग, नाट्य-मण्डप, अभिनेता, अभिनय, दर्शक, सूत्रधार, लोक, शास्त्र, ध्रुवा, वेश, अधिष्ठान, अवस्था, रूपक, आदि असंख्य भाव, बिन्दु, रूढ़ियाँ, स्वरूप,

धर्मिता, वृत्तियाँ, परम्पराएँ क्या-क्या रही हैं ; एक ओर इनके अनुसन्धान, दूसरी ओर इन्हें अपने वर्तमान रंग क्रियाकलाप से युक्त (योग) किये बिना कहीं कुछ भी 'अपना' सम्भव नहीं है।

रंगमंच किसी भी देश और काल का क्यों न हो, वह एक परम्परा है, जीवित धारा है। उसके अर्थ, उसकी प्रकृति, उसके इष्ट, धर्म को वैज्ञानिक रूप से, समूल रूप से देखना और जानना अनिवार्य है।

आधुनिकता की भारतवर्ष पर जो भयंकर मार पड़ी है, उसका यही रहस्य सूत्र है कि विकास का मापदण्ड केवल पश्चिम है। पश्चिम मायने आधुनिक ; आधुनिक मायने जो अपनी जड़ से सर्वथा मूलहीन होकर उनके मापदण्ड के अनुसार चले। इससे दो महत्वपूर्ण परिणाम और प्रभाव हम पर पड़े। हम इस परिणाम और प्रभाव को ही देखने, जानने में असमर्थ रहे। दूसरे, हमारा आत्मविश्वास स्वभावतः इस कदर खण्डित हुआ कि हम मानने को मजबूर हो गए कि जो प्राचीन और पारम्परिक है, वह पिछड़ी और मरी हुई चीज़ है। उससे हमारे वर्तमान का अधिक से अधिक इतना ही सम्बन्ध शेष है कि हम कभी-कभार उसका श्राद्ध और कर्मकाण्ड करके, पुरखों के नाम पर कुत्तों और कौओं को कुछ खिला दें। हमने अपनी पूरी परम्परा को, इसके फलस्वरूप, विचार और क्रिया, दोनों से काट दिया।

उपनिवेशवाद का एक अजब दिलचस्प असर हम पर यह रहा कि जो हमारी दुनिया थी, उसे कल्पित, 'धार्मिक' दुनिया साबित कर दिया गया। अंग्रेज़ों का जो हम पर राज आया, वही असल, वही वास्तविक दुनिया है, यह हमें हृदयंगम कराया गया। यह सिद्ध किया गया कि भारत की दुर्बलता और दरिद्रता उसके ऐतिहासिक पिछड़ेपन के कारण है। जिन मूल्यों व्यवस्थाओं को भारतीय समाज सनातन मानकर सदियों से जीता रहा है, उसे एक अविकसित अवस्था का सबूत मानना पश्चिम की अपनी महत्ता प्रमाणित करने के लिए आवश्यक था। साम्राज्यवादी युग में पश्चिम अपनी सभ्यता के प्रचार-प्रसार को अपनी जिम्मेदारी मानते थे। अब उसी उपनिवेशवादी दिमाग़ के परिणामस्वरूप स्वतंत्र (?) भारत अपने आपको पिछड़ा देश मान कर पाश्चात्य सभ्यता, रीति-नीति को सहर्ष अपना रहा है, ताकि पश्चिम की पूंजी, विज्ञान, कला की सहायता से अपना विकास कर सके।

इसका नतीजा यह हुआ कि संस्कृति की एक अभूतपूर्व अवधारणा यहाँ प्रचारित होनी शुरू हुई।

धर्म के स्थान पर संस्कृति।

प्राचीन भारतीय सभ्यता के अनुसार मनुष्य एक धर्म के सहारे जीता है जो अविभक्त और शाश्वत है। आधुनिक मान्यता धर्म को नहीं मानती। उसका स्थान संस्कृति को देती है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्राचीन भारतीय सनातन परम्परा का महत्व मात्र ऐतिहासिक है। उसमें 'रंग' मूल्य, स्वर, भाव की खोज ही व्यर्थ है। यह पश्चिमी-आधुनिक धारणा हमारी धर्मप्रधान पुरुषार्थ व्यवस्था को मात्र अर्थ-काम व्यवस्था बना देती है।

हमारी धारणा में प्रकृति के प्रति शत्रुता, शोषण का भाव नहीं है। हमारे नाट्य में तभी प्रकृति मनुष्य का अभिन्न अंग है। पश्चिम के 'ड्रामा' में प्रकृति के प्रति बिलकुल विपरीत विचार है। वहाँ ड्रामा रूपी दर्पण में प्रकृति के चेहरे के प्रति क्रूर मज़ाक (ट्रैजेडी) का भाव है।

हमारे भाव के अनुसार मनुष्य की बौद्धिक प्रकृति में एक दिव्य बीज अन्तर्निहित है, जिसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति के संस्कार की आवश्यकता है। दिव्य शक्ति की ओर उन्मुख भाव से चलना, कर्म करना ही सम्यक् कृति है। हमारे नाट्य में एक ओर अभिनय से जिसका संकेत मिलता है; दूसरी ओर नाट्य के मूल सूत्र से—*अवस्था अनुकृति नाट्यम्।*

कृति की संस्कृति है जो कालक्रम से प्रकृति-गर्भ से देवत्व के अवतार का हेतु बनती है। दिव्यत्व का प्रकाशन ही मनुष्य का धर्म है। यही भाव प्रकाशन अभिनय का आधार है।

पर आज क्या स्थिति है? रंगमंच का दो विरोधी हिस्सों में बँटवारा कर दिया गया है। भारतवर्ष का जो प्राचीन है वह वर्तमान का विरोधी है और जो वर्तमान है उसका अपने प्राचीन उत्स, अपनी परम्परा से कोई सम्बन्ध नहीं है। एक कल्पित धार्मिक दुनिया और एक वास्तविक दुनिया—भारत के चित्त के इस विभाजन को देखना और जानना कितना कठिन और कितना महत्वपूर्ण है।

मेरा अनुभव हुआ कि रंगमंच अपने को, सबको देखने का एक विराट मंच है।

हमारा नाट्य, 'अवस्था की अनुकृति' है। पर यह अवस्था क्या है? यह अनुकृति क्या है? इन शब्दों के अर्थों का जब वैज्ञानिक अनुसन्धान किया तो आश्चर्यचकित रह गया। अवस्था का अर्थ है—अधिष्ठान। अधिष्ठान का अर्थ है—आधार। हर अवस्था 'रूप' से अवस्थित रहती है इसीलिए अवस्था है। अवस्था का अधिष्ठान उसका रूपकत्व है। यह मैं नहीं, हमारा शास्त्र कह रहा है।

हमारी परम्परा यह कहती है कि 'वेश' (आहार्य) उसे कहते हैं, जो चित्तवृत्ति को व्याप्त करता है और अपनी प्रतीति द्वारा रस-रूप में संक्रान्त होता है। जैसे—"यह सांख्य का पुरुष कुछ नहीं करता", "उसने मेरे लिए इस पूर्वरंग की निर्मिति कर डाली", "तथा इन दोनों में महत्ता इसकी अधिक है" आदि वाक्यों में प्रयुक्त पुरुष, पूर्वरंग, महत् शब्द क्रमशः सांख्य, नाट्यशास्त्र तथा वैशेषिक दर्शन के विशेष शब्द हैं। इन शब्दों के शास्त्रीय और लौकिक प्रयोग एक-दूसरे को काटते नहीं, बल्कि एक-दूसरे को विस्तार देते हैं।

पर आज हो रहा है इसके ठीक विपरीत। आज आधुनिक खड़ा है प्राचीन के विरोध में, उसी तरह शास्त्र खड़ा है लोक के विरोध में, लोक खड़ा है शास्त्र के विरोध में। परस्पर विरोध का यही विस्तार हमारे वर्तमान रंगमंच के विविध क्षेत्रों, अंगों और पक्षों में विद्यमान है। निर्देशक नाटककार के विरोध में, नाटककार निर्देशक व अभिनेता के विरोध में, अभिनेता निर्देशक के विरोध में खड़ा है। ऐसी स्थिति में रंगमंच के विचार और प्रयोग दोनों पक्ष भयंकर संकट में हैं।

रंगमंच पलायन नहीं है, कहीं कोई भागना नहीं है। यह जीवन का अभिनय है। व्यक्ति के समाज का, समाज से सम्बन्धों की प्रतीति का यह एक 'महाभाव' है। इससे कम नहीं, इससे ज्यादा नहीं।

रंगमंच से जुड़े हुए प्रत्येक अंग को गायक, नर्तक, कवि की तरह प्रत्येक दिन अपने आप से यह प्रश्न करना होगा कि "मैं क्या हूँ", "मैं यह कैसे कर रहा हूँ।"

पिछले कुछ वर्षों में मुझे शान्ति निकेतन, दिल्ली, कोल्हापुर, महर्षि दयानन्द (रोहतक), पूना, आगरा आदि विश्वविद्यालयों में नाटक और रंग-

मंच पर कुछ व्याख्यान देने का सौभाग्य मिला। उसके बाद दिल्ली की नाट्य संस्था 'संवाद' में रंगमंच के विषय में विधिवत् कुछ बातें कहनी चाहीं। पर इन सभी जगहों पर मैंने बहुत गहराई से यह अनुभव किया कि शब्द और अर्थ में भयंकर व्यवधान है। जो हम कहना चाहते हैं उसे हम अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं को बता नहीं पाते, अर्थात् उन तक पहुँचा नहीं पाते। सचमुच हम दो दुनिया में विभाजित कर दिये गये हैं—जहाँ प्रयोग है, क्रिया है, वहाँ विचार नहीं है। जहाँ विचार है वहाँ प्रयोग और प्रस्तुतीकरण नहीं है।

—लक्ष्मीनारायण लाल

1 मई, '84
नई दिल्ली

मन्नू

चरित्र

किशोर

अरुना

काली प्रसाद

नरेश

रीता

चंद्रा

पिताजी

चमन और कुछ लोग

पहला अंक

पहला दृश्य

[ज़िलाधीश के बंगले का कमरा। एक फोन की घंटी बज रही है। दूसरे फोन पर न जाने क्या सुनते-सुनते गुस्से से फोन पटकना। दूसरा फोन उठाकर।]

किशोर : हूँ·····हूँ·····यस·····सब को आर्डर जा चुके हैं। हाँ हाँ·····। सील एव्री थिंग ! यह मेरा आर्डर है। सुनो। हाँ, एस० पी० को आर्डर जा चुके हैं। पूरा फोर्स है। (फोन रखना, फिर घंटी) हेलो, हाँ यस·····क्या ? एस० एस०पी० साहब को दो····· हलो·····हाँ·····हाँ·····अच्छा, मालगोदाम के भीतर से मोहनदास के आदमी बाहर नहीं आ रहे हैं ? हूँ·····हूँ·····ऐसा ? अच्छा·····हूँ·····सारे इंस्पेक्टर हैं वहाँ ? उनके बयान ले लीजिए। तीन बार वार्निंग देकर चारों तरफ से सील कर दीजिए। यस,···· जी हाँ·····आफिस में रहूँगा। जी हाँ, बिल्कुल।

(फोन रखना। इस बीच अरुना आई हुई खड़ी थी।)

किशोर : आई एम सॉरी, यहाँ कोई आये नहीं।

अरुना : आपसबकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर क्यों ले लेते हैं ?

किशोर : ज़िम्मेदार हूँ।

अरुना : पर ज़मींदार तो नहीं हैं।

किशोर : देखो, मज़ाक मुझे कतई पसंद नहीं ।

अरुना : अच्छा, यह बता दो, तुम्हें क्या पसंद है ?

किशोर : अन्दर जाओ ।

अरुना : वही मोहनदास का मामला है ? (सन्नाटा) काफी लेंगे ?

किशोर : दफ्तर जाना है ।

अरुना : दफ्तर या कोर्ट ?

किशोर : कोई फर्क नहीं रह गया ।

अरुना : ऐसे क्यों बोलते हो ? (पुकारना)
चमन, चपरासी, चमन !

(चमन का आना । साहब का मूड देखते ही चले जाना ।)

अरुना : तुम्हारी कलम यहाँ पड़ी है ।
(उठाकर देना चाहना ।)

किशोर : रख दो वहीं । कहीं रख दो । क्या देख रही हो ?
(लेकर) यहाँ कैसे गिरी पड़ी थी ?

अरुना : आज कुछ……।

किशोर : हाँ, कुछ नहीं, बहुत कुछ, बल्कि सब कुछ ।

अरुना : मुझे कुछ नहीं बतायेंगे ।

किशोर : बताने लायक कुछ हो तो……।

अरुना : लंच पर आयेंगे न ? इन्तज़ार करूँगी ।

किशोर : इतनी हिम्मत ! किसी को कोई डर नहीं ?

अरुना : अब क्या ढूँढ़ रहे हैं ?

किशोर : देखना है……वक्त बिल्कुल नहीं है ।

अरुना : मुझे बताइये, मैं कुछ मदद…… ।

(कागजों. फाइलों के बीच कुछ ढूंढ़ना । नहीं पा सकना । परेशान । तेज़ी से निकल जाना ।)

(आफिस में दृश्य)

किशोर : कोई मिलने आये, मना कर देना। कोई भी हो समझे ?

चमन : यस सर।

(जाना)

किशोर : सिर्फ दो ही रंग नहीं हैं, काला और सफेद। और भी रंग हैं। पर हमें कुछ पता नहीं था। किसी ने कभी कुछ बताया ही नहीं। हम केवल ढोंग जी रहे हैं या फिर जी रहे हैं भय !

किशोर : मैंने अब तक क्यों बर्दाश्त किया? क्यों ? नहीं......।

(बाहर चमन और काली प्रसाद की बोलचाल। काली प्रसाद का चमन को धक्का देते हुए ज़बर्दस्ती आना।)

काली : बच्चे हैं अभी। समझ नहीं है। देखते नहीं, कौन क्या है, कहाँ है ? ऊँच-नीच नहीं देखते, बस साले हुकुम के गुलाम ! अरे गुलाम के ऊपर बीबी है, बीबी के ऊपर बादशाह है, बादशाह के ऊपर इक्का है,.....ठीक।

(इसी बीच कालीप्रसाद ने अपने कुर्ते, बन्डी के नीचे कमर पर झूलती हुई पिस्तौल को फिर से दिखाते हुए छिपा लिया है।)

काली : कहिये और क्या हाल-चाल हैं ? सब ठीक-ठाक ? राजी-खुशी, सब परमात्मा का, क्या कहते हैं कि खेल है। उसकी मर्ज़ी के खिलाफ एक पत्ता भी इधर से उधर नहीं हिलता। (इस बीच सामने की

कुर्सी पर ज़बरन बैठ जाना।) आप भी बैठो न, साहब। बैठे-बैठे थक भी तो जाते हैं। क्या कहते हैं, रक्तचाप, ब्लडप्रेशर, बड़ा टैन्शन का ज़माना है न, सर। (सिगरेट दागना, पीना) आप में तो, सर, कोई दुर्गुण ही नहीं है।

किशोर : ऐशट्रे में········।

काली : आदत नहीं है।

किशोर : देखिए, आप कल आइए, इस वक्त······।

काली : कल किसने देखा है। ऐसा है, आपने अपना काम कर दिया। आप सरकार हैं, हुकूमत हैं, आपका एक्शन हो गया। मोहनदास का सब कुछ बन्द—सील ! हुजूर आपको कोई खबर है—कोई मिस चन्द्रा ने यह एफ०आई०आर०आपके खिलाफ····· (कागज दिखाना) रखिए······रखिए, देखलीजिएगा। मेरे पास कई प्रतियाँ हैं।

किशोर : बस, हो गया न, अब जाइए।

काली : बलात्कार के मामले में, हाई कोर्ट का जो नया जजमैन्ट आया है, उसे देखा होगा। अखबार का पूरा पेज आपके लिए ले आया हूँ। एक बात मान गया—सामन्ती समाज है हमारा, इस पर विलायत वालों ने लाद दिया अंग्रेज़ी, बूरोक्रेसी, रंगरेजी डीमोक्रेसी।

किशोर : हूँ। मुझे जाना है।

काली : जाना है तो जाइए। मगर जायेंगे कहाँ ? अरे साहब, हम आपसे काम लेते हैं या नहीं, आपो हमसे काहे

नाही काम लेते ? हमें पराया समझते हैं—नहीं, मैं और आप दोनों एक ही हैं। मगर—हम अलग-अलग हैं। आप लोग पढ़े हो, हम बेपढ़े हैं—दोनों में झगड़ा लगाया है—डीमोक्रेसी ने। सुनिए एक मज़ेदार बात—चीफ मिनिस्टर से उनके बेडरूम में ही मुलाकात हुई। काफी अच्छे मूड में थे। अपने कमिश्नर साहब पांडे जी भी बाहर अतिथि कच्छ में बैइठे इंतजार कर रहे थे। मुखमन्त्रीजी बोले—कहो, के०पी०, क्या हाल-चाल हैं ?......सब कृपा है, सरकार।.....मुस्कराते हुए बोले मुखमन्त्री-जी—जहाँ कारतूस की चर्बी ने अठारह सौ सत्तावन में अंग्रेजों की यहाँ से जड़ उखाड़ने वाली लड़ाई छिड़वा दी, वहीं स्वतन्त्र भारत में खुले-आम चर्बी के आयात पर देश को सरम भी नहीं आया।

किशोर : अब आप चुप रहेंगे या नहीं ?

काली : हुजूर, मैं भी मजाक कर ही दिया—जहाँ एक जलियाँवाला बाग की गोली से पूरे देश को चोट पहुँचा, वहीं अब रोजमर्रा गोली—फाईरग, बम, (कमर की पिस्तौल को मेज पर रखना।) नहला पर दहला मारा। क्यों, हुजूर, ठीक किया न ?

किशोर : उठाइए इसे। उठाइए।

काली : कितनी तो पिस्तौलें हैं—देसी, विदेसी, अब कहाँ तक लाइसेंस बनवाऊँ। सब आप ही तो लोगों की दया है। हमारी लाचारी ऐसी है, साहब, कि हमें कई रखनी पड़ती हैं—पिस्तौल, बन्दूक ही

नहीं, लेडीज आलसो·····नो नो नो, लेडीज नहीं, वाइफ। वाइफ़ का बहुवचन क्या है, सर ?

किशोर : चपरासी !

(आकर खड़ा है।)

काली : अपन तो, सर, बहुवचन को भी एक ही वचन मानते हैं। ऐसा है कि वह जो·····वह जो है—भला नाम है—क्या नाम है ? हाँ, मिस चन्द्रा, उसने जो एफ०आई०आर०····· ।

किशोर : देखिए, मेरा वक्त बर्बाद मत कीजिए।

काली : वही तो अर्ज कर रहा था—कई-कई रखनी पड़ती हैं—किसकी जरूरत कहाँ पड़ जाए। जहाँ काम आवै सुई, का करिहै तलवार। ऐसा है कि, हुजूर, पहले अंगरक्छक—बोडीगाड रखा था, जब से यह तीसरी बार एम०एल०ए० हुआ हूँ, क्या कहते हैं, उसे, 'सैडो' रखना पड़ता है। जी हुजूर।

किशोर : यहाँ से जाते हैं या नहीं ?

काली : कौन है ? (इधर-उधर देखना।) कौन है, सर ? किसको बार-बार जाने को कह रहे हैं ?

किशोर : यू गेट आउट !

काली : ओ हो तो इसमें इतनी परीशानी की क्या बात है (उठकर) अपना घर है, आना-जाना तो होता ही है।

किशोर : यह घर नहीं, कोर्ट है।

काली : कचहरी कहो, कोरट कहो, इजलास कहो। है सब दफ्तर, सब हैं दफ्तरी। (जाते-जाते) सर, वह

मोहनदास वाला मामला। वे अपने ही लोग हैं, हुजूर। बहुत अच्छे लोग हैं। उनसे कभी कोई असन्तुष्ट होकर नहीं गया। उलझने से कोई फायदा नहीं है जी!

किशोर : आप यहाँ से जाते हैं या नहीं?

काली : पढ़े-लिखे लोगों की यही बुरी आदत है—जल्दबाजी करते हैं। अरे आये हैं तो जायेंगे ही। मगर जनाब, अभी-अभी तो आये हैं, अब जायेंगे तो जायेंगे। जाना तो है ही। अंग्रेज आये थे, चले गये। मगर अपनी खुशी से गए। अंग्रेजों की तरह हम न किसी के बुलाने से आये, न किसी के कहने से जायेंगे। बात साफ है न?

किशोर : यही आप जनता के प्रतिनिधि हैं?

काली : यहीं तो आप चूक गये हैं। मैं जनता का प्रतिनिधि नहीं, जनता हमारी प्रतिनिधि है।

किशोर : आप क्या हैं?

काली : आप क्या हैं?......मैं बताऊँ—आप अंग्रेज की दुम हैं—मैं उस दुम का बाल।

किशोर : चपरासी।

काली : चलिए, साथ-साथ बाहर चलें। लेकिन यही एक साथ होना, यही नहीं हो सकता। यही है सारे खेल का रहस्य। अच्छा, बहुत समय लिया, ये दोनों कागज पढ़ लेना, हुजूर, समझने का ही फेर है—आदमी मैं आपका ही हूँ—जैसे आप मेरे हैं, सरकार......(जाते-जाते वापिस।) बेवजह काँटों

से, झाड़ियों से उलझेंगे, तो क्या होगा, कपड़े फटेंगे। जै हिन्द !

किशोर : ब्लैक मेल !

काली : सफेद से ब्लैक का मेल—यही न, साहब ?

किशोर : जाते हैं या नहीं ?

काली : जैसा हुकुम सरकार......। अच्छा किया......आप में हिम्मत है, मैंने चीफ मिनिस्टर से आपकी तारीफ की......क्या कहते हैं......तारीफ के पुल बाँध दिए। बिल्कुल ठीक, इन पूँजीपतियों को तो......। अच्छा किया। और करें मिलावट, काला बाजारी, और करें ब्लैकमेल, बेइमानी, टैक्स चोरी, और खरीदें एम०एल०ए०, एम०पी०, मिनिस्टर, चीफ......। परन्तु सर, हुजूर, एक बार मोहनदास को माफ कर दीजिए—ओनली वन्स मोर, सर।

किशोर : चपरासी !

(चमन का आना)

किशोर : बाहर ! बाहर करो !

काली : अरे बेटे, इधर आ इधर ! नमस्ते कर नमस्ते। बोल, जै हिन्द !

(जाना। प्रकाश जब फिर उभरता है, किशोर अपने बंगले पर। सुबह के अखबार पढ़ रहे हैं। अरुना कई अखबार लेकर आती है।)

अरुना : आज सारे अखबारों में छपा है। देखिए न।

किशोर : हूँ।

अरुना : यह देखिए।

किशोर : हूँ ।

अरुना : (पढ़ना) इसमें काफी तारीफ़ है। पूरे दो कालम का एडीटोरियल । ज़िलाधीश का अभूतपूर्व साहस ! राजनेता, अपराधी और काले धन वाले उद्योग-पति......।

किशोर : अपना समाचार पढ़िए । श्रीमती अरुना, महिला मनोरंजन क्लब का आज संध्या चार बजे उद्-घाटन करेंगी ।

अरुना : ज़िलाधीश की धर्मपत्नी......।

(फोन)

किशोर : हाँ, कौन है ? हूँ......यस......नहीं । किसी का फोन अभी मेरे पास नहीं आना चाहिए।

(फोन रखना)

किशोर : दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लीजिए ।

अरुना : घर के दरवाज़े भीतर से बन्द नहीं किए जाते ।

किशोर : मुझे कुछ ज़रूरी......।

(अरुना का जाना । फोन ।)

किशोर : कौन ?......क्या ? कौन ?नरेश......नरेश कौन ? ......हाँ, हाँ, दे दो......कौन ? (सहसा) ओ नरेश यू ! वंडरफुल ।

(जाकर ले आना ।)

नरेश : वाह भाई, ये नक्शे हैं ! सारे अखबारों में तुम ।

किशोर : यू आर ग्रेट, मुझे भूले नहीं ।

नरेश : अरे भूलने का अधिकार तेरे पास......। क्या ?धीरे

बोलूँ ? तुझे आप कहूँ, सर, जी हुजूर, माई-बाप ..... मैं चला ?

(रोकना ।)

किशोर : नहीं, ऐसा कुछ नहीं ।

नरेश : देखो यार, मैं तुमसे मिलने आया हूँ—तुम्हारी कुर्सी से नहीं ।

किशोर : मैं और मेरी कुर्सी इन दोनों में.....यह तुम्हें कैसे पता ?

नरेश : वरना अखबार में तुम इस तरह क्यों छपते ?

किशोर : अच्छा यह बताओ, तुम कहाँ हो ?

नरेश : तुम्हारे सामने । क्या यह सच नहीं ?

किशोर : क्या करते हो ?

नरेश : जो चाहता हूँ वही ।

किशोर : नरेश यार !

नरेश : बेटा, तुम्हें काम करना पड़ता है, मैं काम करता हूँ ।

किशोर : वही फ्रीलांसिन्ग.....आवारागर्दी ।

नरेश : भाभी कहाँ हैं ?

किशोर : शोर नहीं । दो मिनट, यार । तेरी इस ज़िन्दगी का प्राइस कौन पे करता है ?

नरेश : दूसरे लोग ।

किशोर : मैं खुद अपना पेमेंट करता हूँ ।

किशोर : बैठो ।

नरेश : नहीं, खड़े खड़े ।

(हँसना ।)

किशोर : बताओ न, कहाँ हो ?

नरेश : क्या बताऊँ, कहाँ हूँ ?

किशोर : यार, मज़ाक नहीं ।

नरेश : मज़ाक के अलावा अपनी ज़िन्दगी में तो और कुछ है नहीं । हाँ, तुम्हारे बड़े चर्चे हैं । खबरें छप रही हैं अखबारों में । थेंक्स फार योर स्कैंडल, वरना तेरा पता-ठिकाना मुझे कहाँ से मिलता । (अखबार निकालकर) डी० एम० ज़िलाधीश किशोर सिन्हा……न जाने कितने होंगे किशोर सिन्हा…… के० सिन्हा, मगर जब पढ़ने को मिला—कानपुर निवासी……सेविंटी-सिक्स बैच के आई०ए० एस०……फिर मैंने हिसाब जोड़ना शुरू किया, हो न हो वही है गुरु घंटाल । (अंक में बाँध लेना ।) ये बताओ बेटा, भाभी किधर है,? उसकी खुशबू तो आ रही है ।

किशोर : अबे, चुप भी रह ।

नरेश : ये हुई न बात अब । अब संवाद चलेगा । कम्यू-निकेशन……!

किशोर : क्या करते हो ? कहाँ हो ? कैसे हो ?

नरेश : बताया न, जो चाहता हूँ वही करता हूँ । जहाँ होने की इच्छा होती है वहीं होता हूँ । जैसा हूँ वैसा ही रहता हूँ ।

किशोर : शाबाश, पान के बादशाह !

नरेश : बादशाह नहीं, इक्का !

किशोर : इक्का ?

नरेश : वह रीना याद है ? भूल गए, बेटा ? रीना के लिए जो गीत लिखा था, गीत सुनाऊँ·····।

(किशोर मंत्रमुग्ध-सा खड़ा है। नरेश गीत सुना रहा है।)

ओ मेरे मीत !
यह जो मुझमें तुम्हें अपने को
न समझ पाने की नादानी है
उसे रोको नहीं, होने दो।
मेरे हर बावलेपन पर
कभी नाराज़ हो, कभी हँसकर
मुझे बेसुध कर देती हो
उस सुख को मैं छोड़ूँ क्यों ?
ओ मेरे मीत·····।

नरेश : अरे·····रे·····अरे·····रे !

किशोर : यार·····।

नरेश : तुम रोज़ उसे गीत लिखकर भेजते थे।

किशोर : वह नित्य ताज़े पुष्प भेजती थी।

नरेश : गुरु, मैं ही मध्यस्थ था। सारी लड़कियाँ मुझे झट भाई बना लेती थीं। शक्ल ही ऐसी है।

किशोर : तुम जैसा विश्वासपात्र·····नेक·····।

नरेश : चापलूस !

किशोर : यार, वे भी क्या दिन थे ! बी० ए० फर्स्ट इअर से सेकंड इअर में·····।

नरेश : तेरी आँख उससे लड़ी थी। इंगलिश डिपार्टमैन्ट के

पीछे आम के पेड़ के नीचे खड़े-खड़े उस घड़ी का इंतज़ार, जब वह उधर से निकलकर……।

किशोर : लाइब्रेरी के सामने वाले लान में……।

नरेश : लान नहीं, घास पर, बेटे !

किशोर : हम घंटों बैठकर……।

नरेश : (गा पड़ता है) वे फुर्सत के दिन……। 'ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री, हम भी क्या याद करेंगे कि खदा रखते थे।'

किशोर : 'न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?'

नरेश : यार, तेरा 'मैं' बड़ा स्ट्रांग था।

किशोर : 'हुई मुद्दत कि ग़ालिब मर गया, पर याद आता है, वह हर एक बात पर कहना, कि यूँ होता तो क्या होता ?'

नरेश : अबे शायरुद्दीन, कुछ चाय-वाय पिलायेगा कि…।

किशोर : चुप। …… रीना कहाँ है ? कभी उससे फिर भेंट हुई ? यार, ऐसे क्यों देख रहा है ? क्या हुआ ?

नरेश : जस्ट फारगेट, यार !
(टेप रिकार्डर दबा देना, संगीत उभरना। किशोर का बन्द कर देना।)

किशोर : नरेश !

नरेश : तुम एम० ए० फर्स्ट क्लास होकर आई० ए० एस०

के कंपटीशन में बैठ कर आ गए, रीना तुम्हारा इन्तज़ारकरती रही। क्या बताऊँ कितने 'प्राब्लम' आए। रीना·· ···। रीना मेरे साथ रही।

किशोर : ओह·····वंडरफुल····· रीना और तुम · ·।

नरेश : हाँ, साथ रहे हम। किसी बन्धन में उसे नहीं बाँधा। संबंध का ही बंधन क्या काफी नहीं है? वह तेरी थी न।

किशोर : वह कहाँ है?

नरेश : क्या पता?

किशोर : तुझे भी कोई पता नहीं?

नरेश : मुझसे क्या मतलब, यार! उसने जब तक चाहा, मेरे साथ रही। जाने के बाद जब कोई अता-पता नहीं दिया, तो मान न मान मैं तेरा मेहमान, क्यों? भूलना जब तेरा अधिकार है तो उसका इस्तेमाल वह मेरे लिए भी तो कर सकती है।

किशोर : मेरे लिए नहीं?

नरेश : अरे अब पछताता क्यों है? अब भी समय है—ईश्वर ने हम सबको मिट्टी का एक प्याला दिया। हम अपने उसी पात्र से अपने जीवन को पीते हैं।

किशोर : तुम्हारी आस्तिकता। काश·····।

नरेश : तुम आजकल·····।

किशोर : वह मुझे याद करती रही? तुमने मुझे क्यों नहीं लिखा?

नरेश : जो यह कहता है—मैं तुमसे प्यार करता हूँ·—

इसका मतलब यह है कि तुम मुझे प्यार करो, यह मेरी जरूरत है। बस, जब तक उसकी इच्छा हुई मेरे साथ रही। पूरे ढाई साल तीन दिन, आधा घंटा……। पूरे समय का इसलिए अहसास है, कि वह हमेशा हर वक्त तुम्हें याद करती थी……।

(खामोशी।)

(अरुना का आना।)

अरुना : मैं आ सकती हूँ ?

नरेश : भाभी जी, नमस्ते……नरेश।

किशोर : अरुना……यह……यह……।

(संगीत चला देना। संगीत का छा जाना। अंधेरा। अंधेरे में संगीत। शोरभरा पॉप संगीत। प्रकाश आने पर किशोर सोफे पर लेटा है। ट्राली ट्रे पर ड्रिंक्स का सारा सामान लिए चमन आता है। ड्रिंक्स बनाकर साहब को देता है। एक ही घूंट में पूरा पी लेना। बजर बजता है। चमन दौड़ता है। लौटता है।)

चमन : मिसेज़ नांगलोई।

किशोर : आने दो। ……वेलकम, मिसेज़ रीता नांगलोई !

रीता : हाय !

किशोर : हैलो !

रीता : हाय, क्या म्यूज़िक ! (देखकर) ओ 'हिट एट्टी थ्री' ! (झूम जाना।) यह क्या पी रहे हैं ?

किशोर : ओल्ड मॉक ओन द राक।

रीता : ओ ! यू आर ग्रेट ! दी रिअल ही-मैन !

किशोर : रुकिए, म्यूज़िक का शोर……।

रीता : ओह नो ! आई लव शोर ।

(रीता कैसेट टेप, एल० पी० रिकार्ड्स देखने लगी है। किशोर सोच रहा है।)

किशोर : हालो मैन ! पॉप लाइफ ! इतना शोर ! सारी सेन्सटिविटी कुंद हो जाए । कोमलता पत्थर हो जाए । आदमी का शायर मर जाये । कविता खो जाए । अहसास घिस कर, शोर की गुफा में छिप कर सिर्फ वही एक चीज़ ।

रीता : (सहसा) ओऊ ! हाय ! 'केव म्यूज़िक' ?

किशोर : आपको पसन्द है ?

रीता : ओ आई लव, सोसाइटी फार ओपेन माइंड ।

किशोर : ओपेन माइंड ? ओपेन सोसाइटी ?

रीता : क्यों नहीं ? ……लोग काम और सैक्स के बारे में कम्पलीटली कन्फ्यूज़्ड हैं। तभी तो सारी लाइफ के बारे में इतना 'कन्फ्यूज़न' है। ज़रा-सी बात पर गुस्सा, रूठ जाना, 'मूड आफ', 'वायलेंस'—ये सब बन्द दिमाग और हिपोक्रेसी का नतीजा है ।

किशोर : फिलासफी आफ कनवीनियन्स……

(हँसना)

रीता : देखिए न, जब आदमी हँसता है तो कितना अच्छा लगता है ।

किशोर : और जब रोता है ? गुस्सा करता है ? बेइंसाफी के खिलाफ लड़ता है ?

रीता : 'जैहिन्द' पिक्चर हाल में एक उम्दा पिक्चर लगी हुई है।

किशोर : ओफ !

(बढ़कर संगीत बन्द कर देना।)

किशोर : इस मुल्क में मैडम या तो सनीमा है, या पालि-टिक्स, बल्कि दोनों एक ही चीज़ हैं और हम मूक बधिर दर्शक हैं।

रीता : मूक ? बधिर ? 'व्हाटिज़ दिस' ? बाबा, मैं यह हिन्दी नहीं जानती।

किशोर : आप क्या जानती हैं ?

रीता : लाइफ ! टु लिव लाइफ !

किशोर : किसकी लाइफ ?

रीता : अपनी।

किशोर : आप क्या हैं ?

रीता : ये फूल बड़े सुन्दर हैं ?

(सजाने लगना)

किशोर : जब तक अपने से प्रेम नहीं है, दूसरे से प्रेम नहीं कर सकते। अपने से तब तक प्रेम नहीं कर सकते, जब तक अपने-आपको जाना नहीं कि मैं कौन हूँ ?

रीता : किताबी बातें मत किया कीजिए प्लीज़ ! लाइफ की बात क्यों नहीं करते ?

किशोर : अरुना। अरु ! ओह, बाहर गयी हैं।

रीता : कुछ चाहिए ?

किशोर : बस, यही एक सवाल रह गया।

रीता : आप बहुत डिस्टर्ब्ड हैं।

किशोर : मेरी बुनियाद में किताबें हैं—वे भी अंग्रेज़ों की—लास्की, ब्रेडले, रूसो, एडम स्मिथ, मार्क्स, बर्टल रसेल·····मेरा अनुभव प्रत्यक्ष जीवन का नहीं है। जीवन बिल्कुल कुछ और है। मेरे लिए सब कुछ दो में बँटा है—शरीर—आत्मा, सैक्स—काम, नौकरी—आज़ादी, गुलामी—स्वतंत्रता, प्रेम—कैरियर, थाट—एक्शन।

रीता : हाऊ ब्रिलियन्ट यू आर !

(रीता को कसकर प्यार करना चाहा, पर नहीं कर सका।)

रीता : कम आन·····आपका 'प्राब्लम' क्या है, सर ?

किशोर : जानता हूँ पर विश्वास नहीं।

रीता : कम आन·····लीजिए न।

—एक पैग देना।—

किशोर : 'यस—नो', हाँ—नहीं में इस कदर बँटा हूं·····।

(पकड़े हुए देखते रह जाना।)

रीता : मिसेज़ कहाँ हैं ?

किशोर : उद्घाटन करने गयी हैं। ·····बैठिए।

रीता : ओ नो ! मुझे बैठने से सख्त नफरत है।

किशोर : एक·····छोटा-सा ?

रीता : थैंक्यू वेरी मच·····आज 'टियूज़्डे' है।

किशोर : मंगल तो हनुमान जी का दिन है। माडर्न स्त्री और हनुमान जी......?

रीता : ओ नाट हनुमान......हनू मैन ! एक अमेरिकन मैगज़ीन में पढ़ा है—'टियूज़डे' को सूरज की किरनों में फासफोरस का एलिमैन्ट बहुत बढ़ जाता है। इस दिन फास्ट करने से......यू नो...... फास्ट से......फासफोरस बाडी के लिए बहुत जरूरी है। बाडी...यू नो

(अरुना का आना। हाथ में फूलों का गुलदस्ता।)

अरुना : हैलो !

रीता : हे !

किशोर : आप लोग यहाँ......मैं उधर......।

अरुना : ओ नो !

(किशोर का अलग जाकर बैठना। ये दोनों परस्पर।)

रीता : वाह बड़े मैंचिंग कलर्स हैं !

अरुना : थैंक्यू !

रीता : मेरी यह अंगूठी देखी—कनाडा से मेरे भाई ने भेजी है। यह ऐसा नगीना है, जो हर वक्त रंग बदलता रहता है। देखिए न, आपके सामने...... मेरे सामने, दीवार, लाइट......रंग बदलता रहेगा।

अरुना : हाऊ फनी !

रीता : आपका वज़न कितना चल रहा है ?

अरुना : मैंने 'सोना हेल्थ क्लब' ज्वाइन कर लिया है।

रीता : मैं रेगुलर मैसाज करवाती हूँ।

अरुना : आप फंक्शन में क्यों नहीं आयीं ?

रीता : मुझे लेडीज़ की भीड़ में जाना अच्छा नहीं लगता।

अरुना : बड़ी खास 'गैंदरिंग' थी।

रीता : वे टुअर पर गये हैं।

अरुना : ये घर से निकलना नहीं चाहते।

रीता : काफी डिस्टब्र्ड हैं।

अरुना : सब ठीक हो जाएगा।

रीता : आपने लैक्चर दिया होगा।

अरुना : फंक्शन में आतीं—सारे लोग आए थे।

रीता : जहाँ सारे लोग होते हैं,वहाँ मैं 'एबसैन्ट' रहती हूँ।

अरुना : बैठिए न, मैं अभी आयी।

(जाना।)

रीता : आपको हमारी कंपनी अच्छी नहीं लगती ? आप कुछ सोच रहे हैं ? यह जगह बड़ी स्कैन्डलस हो गयी है। यह सब पर्वर्शन का रिज़ल्ट है। मेरे हसबैण्ड कह रहे थे यह सारा कुछ उसी काली प्रसाद की प्लानिंग है, और इस सबके पीछे दिमाग उसी मोहनदास का ही है। ऊपर के लोग भी तो ऐसे हैं—कहीं कोई 'एक्शन' नहीं लेता। सब अपनी चमड़ी बचाते हैं। अफसर की भी क्या ज़िन्दगी है—अपने ऊपर वालों से डरना, अपने नीचे वालों से काम लेना·····काम कोई करना नहीं चाहता········यू नो।

(अरुना का कपड़े बदलकर आना।)

रीता : हे, किलिंग !

अरुना : अब उठो न, डिनर तैयार है।

रीता : ओह, मिस्टर नांगलोई भी आ गए होंगे।

अरुना : उन्हें भी बुला लेते हैं।

रीता : ओ, आज मेरा 'फास्ट डे' है।

अरुना : तेज़ दिन है, फिर तो क्या कहने।

रीता : आप कौन-सा शैम्पू इस्तेमाल करती हैं ?

अरुना : इनके कोई दोस्त इंगलैंड से ले आये हैं। आइए बैठिए न। अभी तो मुश्किल से साढ़े आठ बजे हैं।

रीता : नो नो। डिनर से पहले हम दोनों थोड़ा योगा करते हैं।

अरुना : यह क्या चीज़ है ?

रीता : ओह, यू डोन्ट नो।……हे बाई !

(जाना। डिनर टेबल पर चमन द्वारा डिनर की तैयारी।)

अरुना : आइए, डिनर !

किशोर : बर्फ चाहिए मुझे।

अरुना : चमन ! बर्फ !

चमन : जी हुजूर।

अरुना : डिनर से पहले स्नान करेंगे ?

(किशोर चुप। चमन फ्लास्क ट्रे में बर्फ रखकर चला जाता है।)

किशोर : आज कुछ भी खाने की इच्छा नहीं है।

अरुना : हो सकता है आज रात किसी समय भी पिताजी आ जायें। (खामोशी।) उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता करने शिक्षामंत्री की पत्नी आयी थीं। हमारी ही यूनिवर्सिटी की पढ़ी हुई हैं। मेरे उद्‌घाटन भाषण की सभी ने तारीफ की। कमि-श्नर साहब की साली भी आयी थीं। और भी कई लोग आये थे। अध्यक्षा ने कहा—हम सर-कारी लोग हैं, कोई हमारा अहित नहीं कर सकता। काफी इन्तज़ाम था 'ऐट होम' में। काली प्रसाद की बुराई सभी कर रहे थे। सबको पता है असलियत क्या है। इसमें चिन्ता करने की ऐसी क्या बात है? बस कीजिए। डिनर में देरी हो जाएगी। सुबह सिर में दर्द हो जाएगा। मेरी यह साड़ी कैसी लगती है?

किशोर : आज हम यहीं नीचे फर्श पर खाना खायेंगे।

अरुना : कोई देखेगा तो क्या कहेगा।

किशोर : अरु, आज वही गाना सुनाओ, जो इंगेजमेन्ट पर… …सुनाओ। संगीत प्रभाकर में तुम्हें फर्स्ट क्लास फर्स्ट मिला था। शास्त्रीय संगीत के 'फिफ्थ इअर' में तुम्हें भारतखण्डे गोल्ड-मेडल मिला था। कविता और संगीत—यही दोनों चीजें मुझे……। तुम्हीं से—सिर्फ तुम्हीं से प्रभावित होकर पिता जी ने……।

अरुना : कितनी बार तो कहा—कोई अच्छा-सा संगीत टीचर…तुम्हारे पास वक्त ही नहीं है। कब से तान-पूरा टूटा पड़ा है, तुम्हें फुर्सत ही नहीं मिलती।

(किशोर की तेज हँसी, फिर एकाएक गम्भीर हो जाना।)

किशोर : जैसे हम लोगों की सारी पढ़ाई, नौकरी के लिए वैसे तुम लोगों का सारा गाना-नाचना शादी के जाल में हम उल्लुओं को फँसाना·····अरु, कभी किसी से प्यार किया है ?

अरुना : व्हाट नॉनसेन्स !

किशोर : प्यार नॉनसेन्स है ?

अरुना : डिनर में देरी हो रही है।

किशोर : प्यार किसी इन्सान से न सही, तुम औरतों का मामला ही ऐसा है, खैर। प्यार किसी चीज़ के लिए—संगीत, नृत्य, बागबानी, 'चाइल्ड केयर', सफाई, सजावट, कोई प्यार, कहीं भी ?

अरुना : घर-गृहस्थी, तुम्हें संभालना—देखना, कोई कम काम है !

किशोर : काम नहीं, प्यार के बारे में पूछ रहा हूँ।

अरुना : (सहसा) पिताजी आ गए।······

(जाना। किशोर का बढ़कर संगीत चला देना। संगीत। अंधेरा। प्रकाश लौटने पर—किशोर नाइट गाउन में वहीं खड़ा है। चारों ओर अंधेरा।)

किशोर : अजीबोगरीब है आदमी की जाति। जो मर जाते हैं, उनकी बातें सुनकर लोग खुश होते हैं, जो ज़िन्दा होते हैं, उन्हें मार डालने की तमाम साजिशें, तरह-तरह की धमकी।·····कैसी दुनिया में आ पहुँचा हूँ, जहाँ कुछ भी साफ-साफ नहीं

बोला जा सकता। अपनी सूझबूझ, अपने दिमाग से जहाँ कोई काम नहीं किया जा सकता। अपने ढंग से अपने दायित्व का निर्वाह नहीं, दूसरों के ढंग से। हाथ मेरा·····दिमाग किसी और का। दूसरों की लादी हुई इतनी बंदिशें। योग्यता-अयोग्यता सब बराबर। कुछ रटे-रटाये शब्द, वाक्य, उन्हीं के सहारे काम लेना। मैं क्या हूँ—बस, मेरे नाम पर कुछ 'रुटीन' हैं।

(उस अंधेरे में से पिताजी प्रकट होते हैं।)

पिताजी : यह सही है, शिष्टाचार बढ़ता जा रहा है, दिल सिकुड़ता जा रहा है।

किशोर : पिताजी, प्लीज़, अब भूमिका मत बाँधिये। आप ने मुझसे हमेशा सीधी बात की है।

पिताजी : मैं अब भी सीधी बात करता हूँ। तुम्हें टेढ़ी लगती है, इसका कारण है। तुम अपने-आपको दिनों-दिन अकेला, और अकेला मानने के लिए मजबूर होते चले जा रहे हो।

किशोर : जो सच्चाई है, उसमें मजबूरी कैसी ?

पिताजी : सच्चाई नहीं, भ्रम है।

किशोर : भ्रम ?

पिताजी : माडर्निटी ! आधुनिक ! जो तुम नहीं हो।

किशोर : मैं नहीं हूँ ? मैं क्या हूँ ?

पिताजी : जो इसी प्रश्न से भागता रहा है ? जो अपने 'रूट्स'—मूल से जुड़ने में भयभीत है।

किशोर : क्यों ?

पिताजी : देहासक्ति के कारण, तभी तुम्हारा वर्तमान युवा-विरोधी है—बुढ़ापा बना रहे—सबकी चिन्ता रिटायरमैन्ट के बादकी है—मृत्यु से डरे हुएलोग। घमण्डी, भावुक, सेन्टीमैन्टल !

किशोर : मैंने कम्पटीशन में नहीं बैठना चाहा था, आपने कहा—बेटे, मेरी इज़्ज़त के लिए बैठ जाओ। मैं अभी शादी नहीं करना चाह रहा था, आपने एक सुयोग्य कन्या डिग्रियों और सर्टिफिकेट्स से लैस, मुझे विवाह बन्धन में······आप हमेशा आदर्शवादी रहे हैं, कुछ जीवन मूल्य रहे हैं, पर आपके चारों ओर की दुनिया ? आपने कहा—बेटे, सच बोलना, सच्चाई का जीवन जीना, आदर्शों से गिरना नहीं। इसका नतीजा क्या निकला ? किसी भी पोस्टिग में एक साल से ज़्यादा नहीं रह पाया। काम करना शुरू नहीं किया कि ट्रांसफर। एक पोस्टिग से दूसरी पोस्टिग। पर चार्ज लेने से पहले ही वहाँ खबरें पहुँच जाती थीं—ईमानदार है, बेवकूफ······!

पिताजी : ईमानदारी का फल खुद को नहीं मिलता, बेटे। सच्चाई और ईमानदारी की कीमत चुकानी पड़ती है। देखो, मुझे······सीधे पोस्ट मास्टर हुआ था, वहीं से चुपचाप रिटायर हो गया, आगे कोई तरक्की नहीं। कितनी इन्क्वायरी बैठी मेरे खिलाफ। कितने डिपार्टमैन्टल केस। ईमानदारी का फल दूसरों को मिलता है, बेटे। दरख्त अपना

फल कभी नहीं खाता। पहाड़ से नदी चलती है—पहाड़ को नदी का पानी नहीं मिलता। पानी समुद्र को मिलता है। समुद्र से भाप बनकर बादल। बादल फिर पहाड़ पर····· फिर नदी·····ऐसे ही होता है। सीधे नहीं। सीधा उल्टा नहीं हो सकता। हर चीज़ घूमकर अपने 'रूट्स'—मूल पर पहुँचती है।

किशोर : आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।

पिताजी : आओ, ईश्वर से प्रार्थना करें—और कोई उपाय नहीं है।

किशोर : पिताजी !

पिताजी : डरो नहीं।

किशोर : पिताजी, आप नहीं जानते, मुझ पर क्या-क्या हुआ है।

पिताजी : हे ईश्वर !

किशोर : अंधविश्वास।

पिताजी : विश्वास का संस्कार मिलता है। देखो मुझे, कितना संतोष है—जो मिला, जो नहीं मिला। कोई फर्क नहीं।

किशोर : आपको अपने काम का आत्मसंतोष मिला। हमारी हालत देखिए—एक मुख्यमंत्री ने मेरे सामने कहा—सीधे मुझसे—'काम बेईमानी से होता है, श्रीमान, ईमानदारी से नहीं। ईमानदारी चाटें तुम्हारी !"

पिताजी : सच है, उनका काम बेईमानी से होता होगा।

(इस बीच पिताजी से बात करना। फोन आने से कट कर फोन उठाना-रखना। दूसरा, तीसरा, चौथा फोन, अलग-अलग स्थानों पर रखे फोन को सुनना।)

किशोर : पिताजी, (फोन) मैं हमेशा आपकी ही बात क्यों मानता रहा ? (फोन) जी हाँ, कुछ बातें सनातन होती हैं, लेकिन आदमी मेरा 'मैं' भी कुछ होता है। (फोन) जी पिताजी.....।

पिताजी : आदमी कुछ नहीं होता। 'मैं' भ्रम है, अज्ञान है उसका।

किशोर : मैं कुछ नहीं हूँ ? (फोन) मैं अज्ञान हूँ ? जी नहीं मैं हूँ। मैं अब इसे साबित करूँगा। (फोन) हैलो ..... अभी फोन मत दो मुझे। कितनी बार कहा। (रखना) पिताजी.....।

पिताजी : बेटे, हर बात में तुम इतने इमोशनल क्यों हो जाते हो ? कोई गहरा अभाव है तुममें। (रुक कर) हाँ, माँ का अभाव। इसी अभाव को पूरा करने के लिए तुममें इतनी बेचैनी.....।

किशोर : हाँ, हाँ, शायद माँ का अभाव।

पिताजी : हर बात में शायद..... संदेह..... तर्क.....।

किशोर : यहाँ निश्चित कुछ नहीं है।

पिताजी : मोहनदास, मिस चन्द्रा, कालीप्रसाद, तुम सब कुछ निश्चित नहीं है ? नहीं है फिर लड़ाई किस बात की ? 'मॉक फाइट', लड़ाई का ड्रामा.....। प्यार स्नेह, आदर, क्रोध, सब फिल्मी। संदेह हो माडर्निटी है। संदेह, तभी इंसान मशीन हो रहा।

किशोर : संदेह क्यों है ?

पिताजी : संदेह है नहीं, पैदा किया गया—सबूत का तर्क खड़ा कर। ज्ञान है, विज्ञान पैदा किया गया—'मैं' सुपर पावर है—जो चाहे ले सकता है—जो चाहे कर सकता है पर चारों ओर यह हाय-हाय··· धाँय धाँय·····काँय-काँय ! (हँसना) बेटे, जो 'है' उसे कोई सबूत नहीं चाहिए। जो नहीं है उसके लिए सब सबूत बेकार हैं ।

किशोर : आप हर वक्त फिलासफी में चले जाते हैं। मैं ठोस यथार्थ ज़मीन पर खड़ा·····।

पिताजी : ठोस, यथार्थ····· ऐसा कुछ नहीं है, बेटे। वस, अपने आप को देखो, इतना ही काफी है। सारी दुनिया तुम्हारे मुताबिक चले, यह भ्रम—अहंकार छोड़ दो।

किशोर : मैं ·····मैं·····।

पिताजी : कोई 'मैं' तुम्हारे अधिकार में नहीं।

किशोर : मैं आपके अधिकार में नहीं हूँ ?

पिताजी : ऐसा भ्रम मुझे नहीं है।

किशोर : मैंने आपकी बातें नहीं मानीं ?

पिताजी : वह मानना नहीं, मजबूरी थी। (रुक कर) जिसके बारे में कोई स्वयं फैसला न ले सके, वह काम उसे नहीं करना चाहिए। (रुक कर) तुम कर भी क्या सकते थे ? होस्टल में रहकर सारी पढ़ाई की। तुम्हारी दुनिया सिर्फ किताबी दुनिया थी—लास्की, एडम स्मिथ, प्लेटो, मार्क्स, आक्सफोर्ड

डिक्शनरी.....। आइडिया ही तुम्हारी रिएलिटी थी। नौकरी के अलावा और क्या कर सकते थे। एम०ए०, फिर आई०ए०एस०। इससे बढ़कर नौकरी और क्या हो सकती है ? अंग्रेज़ी हुकूमत से हमारी लड़ाई की बुनियाद नौकरी ही थी। सो आज़ादी के नाम पर अंग्रेज़ हमें अपना नौकर बनाकर चला गया। नौकरी राजनीति है, राजनीति नौकरी है—ऊपर से डरो, नीचे डराकर रखो। (रुक कर) तुमने पहली बार कुछकर गुज़रने का स्वयं फैसला लिया, बधाई.....मन्यू ! मन्नू नहीं, मन्यू !

किशोर : जिसके बारे में मैं स्वयं कोई फैसला न ले सकूँ, वह काम मुझे नहीं करना चाहिए ?

पिताजी : खबरदार, अब मेरा कहना नहीं, खुद...स्वयं अपना.....।

किशोर : अपना क्या है ?

पिताजी : यही देखना-जानना है।

किशोर : देखने-जानने से पहले आप लोग इतना कुछ बता देते हैं कि कोल्हू के बैल की तरह उसी एक घेरे में चक्कर लगाने के सिवा और कुछ नहीं रह जाता।

पिताजी : आवेश में आकर देखना चाहते हो ?

किशोर : मैं कुल सात साल का था जब माँ नहीं रहीं, आप तीस साल के थे तब। मुझे झूठ, गन्दगी, अन्याय, बद्तमीज़ी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं। रोज़ मारपीट

लड़ाई करके घर आता था। एक दिन आपने कहा था—बेटे! यह लड़ाई-झगड़ा करने की आदत छोड़ दो, नहीं तो दुनिया कहेगी—बिना माँ का बिगड़ गया। उस दिन से मैं……। आज मुझ पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि मैंने मिस चन्द्रा के साथ……। मुझ पर उस जगह चोट की जा रही है, जो मेरे बर्दाश्त के बाहर है।

पिताजी : जब बर्दाश्त के बाहर है तो लड़ोगे क्या? लड़ाई है, तो लड़ाई है। अब यही देखने की बात है, कौन किससे लड़ रहा है, लड़ाई कहाँ है? शत्रु कौन है? लड़ने के साधन क्या हैं? समझ लो वक्त बिल्कुल नहीं है। संकटकाल है—ज़िन्दगी का हर क्षण 'क्राइसिस' है। पहले ध्यान से देख-समझ लो, फिर 'एक्शन' में उतरो।

किशोर : देखना क्या है?

पिताजी : अपने-आपको।

किशोर : देखा है।

पिताजी : नहीं देखा है, नहीं तो एक झूठे प्रहार से तुम्हें इतनी चोट नहीं लगती। बलात्कार नहीं किया, पर आरोप की चोट क्यों लग गयी? देखो यह क्या है? तुमने अपने आपको नहीं देखा, हाँ, इतनी भाग-दौड़ में अपने-आपको कौन देखे, समय ही कहाँ है, देखते हैं अपने 'पावर' को—पावर इन्स्टीच्यूशनलाइज़्ड इज़ आथॉरिटी। आई०ए०एस० इक्ज़ीक्यूटिव पावर इज़ आथॉरिटी,। लेकिन

पावर है क्या ? व्हाटिज़ पावर ? पावर जुड़ा है डिफीट से, पावर माने पावरलैस ! पावर माने गुलामी—परतन्त्रता ! अब तक क्या देखा ? देखा ही नहीं ?

किशोर : पिताजी ।......

पिताजी : जब तक कोई भी इच्छा, वासना शेष है तब तक गुलामी है। पर देखो, इच्छा वासना ही जीवन है। जीवन माने बंघन 'क्राइसिस'। कहीं नहीं है फ्रीडम —केवल पावर है पावर—शक्ति, सत्ता—जो इस जेलखाने को कबूल कर, देखकर हर वक्त साव-धानी, सूझबूझ से चलेगा, जियेगा वही......वही......

किशोर : बकवास ! बकवास ! बकवास !!

पिताजी : देख लो अब।

किशोर : किसे फुर्सत है इन बातों के लिए ?

पिताजी : बिना कुछ जाने समझे क्या करोगे ?

किशोर : लड़ूँगा—अपनी ईमानदारी से।

पिताजी : ज़िन्दगी सिर्फ ईमानदारी नहीं है।

किशोर : तो क्या मैं लड़ूँ नहीं ? भाग जाऊँ ? नौकरी से त्यागपत्र दे दूँ ? सब कबूल कर लूँ ?

पिताजी : बिना इमोशनल हुए पूरी सूझबूझ के साथ।

किशोर : पिताजी, आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।

पिताजी : यहाँ किसी पिता की बात किसी पुत्र की समझ में नहीं आती—आ नहीं सकती—'दिस इज़ कलो-नियल रिएलिटी !'

किशोर : ओफ़, आप कहाँ से कहाँ चले जाते हैं !

पिताजी : पूरी समूची चीज़ देखे बिना डाक्टर आपरेशन नहीं करता। (रुककर) बेटे, समझो। चारों ओर से दुश्मनों से घिरे हो केवल तुम्हीं नहीं, हर प्राणी, और किसी के पास अवसर नहीं है, हाँ, नहीं है—न भागने का, न इमोशनल होने का—सिर्फ देखना है, लड़ना है—और जीतना है। (जाने लगना।)

किशोर : पिताजी……

पिताजी : लड़ाई यहाँ है, (सिर छूना) यहाँ नहीं (दिल छूना), यहाँ खुद फैसला कर लो। एक्शन नहीं, कर्म, जिसके कर्ता हो तुम। आल द बैस्ट ! (थम्स अप) शाबाश।

(पिता जी का जाना। रोशनी केवल किशोर पर।)

किशोर : खास तौर पर मुझे यहाँ भेजा गया 'ला आर्डर' यहाँ था ही नहीं—जहाँ देखो वहाँ क्राइम्स, अंधेर खाता, लूटमार, अन्याय। मैंने अपनी समझ मुताबिक यह जाना है, सारे अपराध की जड़ में जुआ है—गैम्बलिंग। सबसे बड़े जुआ अखाड़े पर मैंने छापा डलवाया……।

(अंधेरे में एक चेहरा उगता है।)

एक : ओ हो हो……अब आप आए हैं मिस्टर आनेस्ट वीर बहादुर ! आपका ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है, सारे क्राइम्स की बुनियाद में गैम्बलिंग है—काफी समझदार हो, मगर समझदार आदमी नहीं हो।

अरे उल्लू की दुम, यह क्यों नहीं सोचा कि जुआ
की बुनियाद में क्या है ? जो हारा है, वह हार
कबूल करना नहीं चाहता—हा हा हा ! तुम्हारा
क्या ख़्याल है, आजकल एक एम०एल०ए० के
एलेक्शन में कितना खर्च होता है—एक लाख, दो
लाख, चलो मान लेते हैं दो लाख, वैसे तुम्हारा
हिसाब-किताब निहायत कमजोर है। ये दो लाख
कौन लगाता है, और किस पर लगाता है ?
जो लगाता है वही दरअसल जुआ खेलता है।
जिस उम्मीद पर लगाता है, उसकी सारी नब्ज
अपने हाथ में होती है—इसलिए उम्मीदवार का
मोहरा वही बनाया जाता है, जो निहायत बुज-
दिल, बिकाऊ और कौड़ी की तरह······(चमड़े के
पात्र में कौड़ियों की झनझनाहट। शोर के बीच फर्श पर
कौड़ियों को गिराना।) मेरी कौड़ी जीत गयी। मेरी
कौड़ी एम०एल०ए० हो गयी।

इंकलाब—ज़िन्दाबाद, कालीप्रसाद—
ज़िन्दाबाद······। अरे कालीप्रसाद। नहीं नहीं,
कालीप्रसाद जी······।

काली : नमस्ते।
(पैर छूना।)

एक : देखो, कुल ढाई लाख लगाया है चुनाव में। अब
कम-से-कम पाँच लाख, हिसाब की बात है।

काली : रास्ते पर उतारा है तो रास्ता भी बताइये।

एक : (कागज पर) पाँच साल में यहाँ एक जुआखाना, यहां
गुप्त चकला······यहाँ······शराब की दुकान।

काली : जो आज्ञा ।

एक : यह लीजिए इतना और लगाइए, मंत्रीमंडल में अवश्य आ जाइए……।

(दोनों का हंसना । डरने-डराने का अभिनय करना ।)

एक : यह किशोर दर्शक है बेचारा ।

काली : अच्छा ।

एक : पूछो उसे क्या चाहिए ?

काली : क्या चाहिए ? पोस्टिंग, ट्रांसफर ? डिपार्टमेन्टल इन्क्वायरी ? ओ……यहाँ कुछ काम करना चाहता है ? आ जा……आ……।

एक : आइए……कोठी पर डिनर । फैक्ट्री का उद्-घाटन……। फिल्म प्रीमियर में चीफ़ गेस्ट । भारत दर्शन……फारेन टुअर……फाइव स्टार होटल में नाइन स्टार्स ।

(किशोर पर प्रकाश सिमटकर बुझ जाता है । जब प्रकाश लौटता है किशोर का आफिस । किशोर, नरेश और काली । किशोर फाइलें पढ़ने, नोटिंग करने में लगे हैं ।)

काली : इस सज्जन को इहाँ से हटाय दीजिए, आपसे कुछ प्राइवेट बात……हैं जी··जी ।

किशोर : यह यहीं रहेंगे—कहिए ।

काली : आपकी तारीफ़ ? मुझे कालीप्रसाद कहते हैं—एम०एल०ए० सरकारी……।

नरेश : मेरे कई नाम हैं—नरेश, आदित्य, दीपंकर, शेखर, विवेक, महेश, गौतम वगैरह-वगैरह ।

मन्नू

काली : वाह ! अपना राष्ट्र इतना 'डेवलेप' कर चुका है। (हाथ मिलाते हैं।) कौन कहता है भारत...... क्या नाम है उसका ? 'अंडरडेवलेप' या 'डेवलपिंग'... ...कुछ ऐसा ही है। खैर, आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। साहब के दोस्त हैं। कहाँ काम करते हैं ? क्या काम-धन्धा है ?

नरेश : कुछ समझा नहीं।

काली : करते क्या हैं ?

नरेश : कुछ नहीं।

काली : कमाल है !

नरेश : जब जो ज़रूरत होती है, कर लेता हूँ। एक्टिंग, फाइटिंग, राइटिंग......।

काली : टाकिटिंग एंड टाकिटिंग ! हाँ तो सर, आपसे कहने आया हूँ कि, देखिए आप दो मिनट के लिए......।

(नरेश का जाने लगना।)

किशोर : रुको। हाँ जी, कहिए।

काली : प्राइवेट को पब्लिक बनाने से भला क्या फायदा ? खैर, अपना तो फर्ज़ है—खबर देना, खबर लेना। हुज़ूर, आपको पता ही होगा विगत अट्ठाईस मई को उच्चतम न्यायालयने अपने एक फैसले से बलात्कार कानून की सारी तस्वीर ही बदल दी। अब उसके अनुसार बलात्कार की शिकार महिला के बयान पर शक नहीं किया जा सकेगा। आरोप की पुष्टि के लिए कोई अन्य सबूत की भी ज़रूरत नहीं।

नरेश : लेकिन अगर हालात ऐसे हों, जिसमें डाक्टरी सबूत मौजूद है, तब इसके बारे में अवश्य ग़ौर होगा।

काली : देखिए, बीच में मत डिस्टर्ब कीजिए।

नरेश : माफ़ कीजिए, मैं एक डेलीपेपर के प्रतिनिधि की हैसियत से आया हूँ। यह देखिए मेरा कार्ड। मोहनदास का मामला और मिस चन्द्रा का केस —दोनों के बारे में......।

काली : अरे तो यह हुई न बात। आइए बाहर चलें।

(दफ्तर के बाहर आकर)

काली : लीजिए, सिगरेट पीजिए।

नरेश : धन्यवाद, नहीं पीता।

काली : तो क्या पीते हैं ?

नरेश : ग़म।

काली : मज़ाक कीजिए बन्द, क्या नाम है ?

नरेश : अखबार में आदित्य के नाम से लिखता हूँ।

काली : आपको टी०वी० में देखा है।

नरेश : जी हाँ, वहाँ मैं दीपंकर हूँ.....।

,**काली** : अरे आप तो बड़े काम की चीज़ हैं। देखिए शाम को आप हमारी महफिल में रहेंगे, कोई बहानेबाज़ी नहीं चलेगी।

नरेश : जी हाँ, मैं ज़रूर हाज़िर होऊँगा।

काली : कहाँ टिके हैं ?

नरेश : स्टेशन पर—डारमेट्री में—बेड नं० तेरह ।

काली : कमाल है ! हद हो गयी । हमारे गेस्ट हाउसेज क्या साधु-सन्त-फकीरों के लिए हैं। आइए, चलिए मेरे साथ......ड्राईवर......मोतीसिंह......।

नरेश : जी नहीं, मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगा । हाँ, शाम को आप जहाँ कहें......पता बताइए ।

काली : देखिए लज्जित मत कीजिए। इस नंबर की गाड़ी आपकी सेवा में रहेगी । दिन भर आप शहर में जहाँ जो चाहें कीजिए। यह लिफाफा रख लीजिए । शाम को ड्राईवर खुद......।

नरेश : जी नहीं, मुझे किसी लिफाफे की जरूरत नहीं । यहाँ आए तीन दिन हो गए हैं मुझे । अब कहीं भी आना-जाना नहीं है। जहाँ कहें वहीं समय से सीधे हाजिर हो जाऊँगा ।

काली : यह तो कोई बात न हुई ? क्या आप हर चीज में निश्चित हैं ? कहीं कोई डाउट, वगैरह नहीं है ?

नरेश : जी हाँ, कुछ ऐसा ही है ।
(सन्नाटा ।)

काली : मेरे साथ चलिए न, यहाँ क्या करेंगे बैठकर ?

नरेश : चलिए ।

काली : अरे ! मेरा खयाल था, आप ना कर देंगे ।

नरेश : कोई बात नहीं । आप शौक से जाइए । शाम को भेंट होगी ।

काली : आइए......आज सारे प्रोग्राम कैंसिल......आइए मेरे साथ ।

नरेश : साहब को बता आऊँ।

(जाकर)

नरेश : घंटाल के साथ जा रहा हूँ।

किशोर : फिर भेंट कब होगी ?

नरेश : जब होगी।

(आकर)

नरेश : चलिए।

काली : आप बड़े नियम-कानून के आदमी हैं।

नरेश : धन्यवाद।

(जाना। अंधेरा। प्रकाश। नरेश और कालीप्रसाद। कालीप्रसाद फोन पर)

काली : हूँ····· हूँ·····ऐसा ही होता है। नहीं, नहीं, आज किसी से भी मिलना संभव नहीं। जी, आज तबीयत ठीक नहीं। बुखार में पड़ा हूँ। (फोन रखना। फिर करना।) हैलो, मम्मी जी, मैं बोल रहा हूँ···
···चन्द्रा कहाँ है ? बुलाइए। (नरेश से) और क्या हालचाल हैं, भाई साहब ?·····हालो चन्द्रा, ठीक ठाक ?·····हाँ, हाँ, अच्छा ऐसा है—तुम फौरन आ जाओ। यहीं सीधे।

(फोन रखना।)

काली : आपको पूरी बात मैंने बता दी—दिल खोलकर। और पूरा विश्वास है, कि ये फैक्ट, आप अखबार में नहीं देंगे।

नरेश : जी।

काली : और कीजिए। मोहनदास का मामला किस तरह से बैकग्राउंड में चला गया, फोरग्राउंड ही कहते हैं न, हाँ, मिस चन्द्रा का बलात्कार केस फोरग्राउंड में आ गया। 'मनी इज़ पावर। मनी कैन टाक।' रुपया भाषा है। कम्युनिस्ट...... नहीं नहीं......क्या कहते हैं......बड़ा अच्छा अल्फाज है......ओ......।

नरेश : मनी कम्यूनिकेट्स......।

काली : वाह-वाह ! कम्यूनीकेटस !

नरेश : अब बताइए, डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट हैं तो क्या हुआ, विकासशील मुल्क की डीमोक्रेसी में कोई कुछ नहीं है, जी हाँ, चक्कर में पड़ गये न, बदनामी ऊपर से।

नरेश : इसका कोई सबूत ?

काली : बलात्कार के अभियोग में अब सबूत की कोई ज़रूरत नहीं है। जी हाँ, हाथ मिलाइए। इस समय देश में बलात्कार के मामलों की सुनवाई भारतीय दंड संहिता की धारा ९० तथा ३७५ और एक पुराने गवाही कानून के अंतर्गत होती है। ये समस्त कानून की धाराएँ इतनी लचीली हैं कि इसमें अपराधी को बच निकलने के काफी अवसर मिल जाते हैं। इसके आधे से अधिक मामले खारिज हो जाते हैं। कई मामलों में बलात्कार की शिकार महिला अपराधियों के मुँह ढके होने के कारण उनकी शिनाख्त भी नहीं कर पाती और कई बार बलात्कार के बाद महिला

की हत्या भी कर दी जाती है। इस प्रकार के काण्डों में गवाही जुटा पाना एकदम असंभव है। वर्तमान फैसले से सबूत के अभाव में भी केवल महिला के बयानों पर विश्वास करने से बलात्कारियों पर जबरदस्त प्रहार हुआ है। कानून के इस अभूतपूर्व कदम ने असहाय महिलाओं के लिए......। देखिए मेरी भाषा पर कंट्रोल !

नरेश : मनी कम्यूनिकेटस......।

(मिस चन्द्रा का आना।)

काली : यही हैं मिस चन्द्रा। इनसे मिलो, नरेश जी...... ।

नरेश : अरे, ऐसा लगता है, आप को कहीं देखा है। आप कहाँ की रहने वाली हैं ? आप यहाँ क्या करती हैं ?

(देखते रह जाना।)

चंद्रा : (चुप)

नरेश : बैठिए। बैठिए न। (नहीं बैठना।) कालीप्रसाद जी, अब चलूँगा—इजाज़त दीजिए ।

काली : इनसे कुछ बातचीत नहीं करेंगे ? मैं ज़रा एक काम से......। ये ज़रा देर में खुलती हैं।

(काली का जाना।)

नरेश : आप के सिवा और कौन जान सकता है सच्चाई, मगर क्या सभी नहीं जानते, आपके कंधे पर बन्दूक रखकर ज़िलाधीश किशोर पर निशाना लगाया जा रहा है !

चंद्रा : मैं कतई नहीं जानती आप कौन हैं ? आपके सवालों से मेरा कोई भी ताल्लुक है। दूसरे के

कंधे पर बन्दूक रखकर निशाना लगाना—यह मुहावरा अब गलत हो चुका है। दूसरे पर बन्दूक चलाकर हत्या करने का अभ्यास करना—अब यह मुहावरा है।

नरेश : आपके बोलने का ढंग ? आपका चेहरा-मोहरा कितना मिलता है......।

चंद्रा : जा रही हूँ।

नरेश : आप......आप......।

चंद्रा : मेरे पास वक्त नहीं है।

नरेश : रुकिए। प्लीज़, आप रीना की बहन तो नहीं हैं, बोलिये। जवाब दीजिए।

चंद्रा : क्या ?

नरेश : तुम......रुको।

□□

दूसरा अंक

दूसरा दृश्य

(बंगले में वही कमरा—अरुना फोन पर बातें कर रही है।)

अरुना : ओह, आप वह फिल्म देख आयीं ? अब तो जिसे देखो वही फिल्मी हीरो हो रहा है······जी हाँ, बिल्कुल····नहीं नहीं, मंगल को छठ का व्रत है मेरा। सारे व्रत-त्यौहार करती हूँ, हाँ हाँ, इनकी जन्मपत्री उसी ज्योतिषी को दिखाई है। हाँ, बहुत परेशान हैं, बिल्कुल······हम से क्या मतलब······।

(भीतर से पिताजी का आना।)

पिताजी : डेढ़ बज गया, वे नहीं आये······।

अरुना : दफ्तर में फोन भी नहीं लगता। आप लंच ले लीजिए।

पिताजी : जब कहा है तो ज़रूर आयेंगे।

अरुना : तब तक आप 'सूप' पी लीजिए। लगता है आ गये। (देखकर) जी, आ गये।

(किशोर का आना।)

किशोर : पिताजी, मुझे आपकी यह बात—अहंकार एक प्रयोजन है······यह खींचकर कहाँ से कहाँ ले जाता है !

पिताजी : क्या हुआ ?

किशोर : लखनऊ में चौधरी दिलीपसिंह के लड़के गजानन की जो हत्या हुई थी, उसमें मोहनदास के बड़े लड़के विक्रमदास के खिलाफ वारंट है।

पिताजी : देखो, एक नये अनुभव की शुरूआत है तुम्हारे जीवन में—अगर चारों ओर असत् है, तो चारों ओर सत् भी है।

किशोर : असत् और सत् में कोई फर्क है ?

पिताजी : वही फर्क देखने की कोशिश करो। जो कुछ भी आ रहा है, सब नये से नया है—तुम उसे 'रुटीन' मानते हो ?

अरुना : आइए, लंच तैयार है।

(सब का जाना। बाहर कालीप्रसाद और नरेश। काली प्रसाद बेहद आवेश में हैं।)

नरेश : शांत। प्लीज़·····शांत।

काली : साले को समझा दो, मेरी नज़र के सामने से हट जाये।

नरेश : अपने-आप भाग जायेगा। अंदर चलिए प्लीज़। इतना गुस्सा आपको·····।

काली : आप पढ़े-लिखे लोग हैं न····· इन सालों हरामज़ादों को आप नहीं जानते।

नरेश : मैं बिल्कुल पढ़ा-लिखा नहीं हूँ— सड़क छाप हूँ— माफ़ कीजिए। अरे भाई, जा यहाँ से।

काली : यह कमीना ऐसे नहीं जायेगा। (पिस्तौल से फायर)

बस, राम नाम सत्य, साला।

(नरेश का उधर भागना। भीतर से किशोर, पिताजी का आना। चमन दौड़ा हुआ आता है।)

किशोर : क्या हुआ ?

चमन : सर, मर्डर हो गया !

काली : मैंने मारा कुत्ते के पिल्ले को।

किशोर : यहाँ ? इस अहाते में ?

काली : साले ने मजबूर कर दिया। (जाने लगना।) माफ़ कीजिए मुझे झट लखनऊ पहुँचना है। अपनी हाजिरी वहीं। आप खामखा……।

(काली का जाना। नरेश का आना।)

किशोर : नरेश।

नरेश : मैं कालीप्रसाद जी के साथ ही यहाँ आया था।

किशोर : चमन, फोन लाओ।……कौन था ?

नरेश : मैं नहीं जानता। वह उनके पीछे-पीछे आ रहा था। ये मना कर रहे थे।

(किशोर का फोन करना।)

किशोर : (फोन पर) सिविल सर्जन साहब, आप फौरन आइए……यहाँ मेरे अहाते में ही कोई दुर्घटना हो गयी है……हाँ, देख लीजिए……जी हाँ, जो कानूनी कार्रवाई हो कर लीजिए……। (दूसरा फोन) एस० पी० साहब, बुलाइए उन्हें।……हलो……हूँ, जल्दी आ जाइए, जी हाँ, कुछ ऐसा ही हुआ है। आपको

कैसे पता ? हाँ-हाँ, लखनऊ से किसी ने खबर दी है ? अच्छा देख लीजिए।

(फोन रखना। फोन चमन के हाथ में है।)

किशोर : पिताजी, आप उधर कहाँ जा रहे हैं ?

पिताजी : देखने।

किशोर : नहीं।

पिताजी : जो हो रहा है उससे आँखें मूँद लूँ ?

किशोर : यह आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है।

पिताजी : मुझे अपनी ज़िम्मेदारी खुद तै करनी है।
(जाना।)

किशोर : (अन्दर जाते हुए) कालीप्रसाद के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?

नरेश : कालीप्रसाद जी कालीप्रसाद हैं, बस। मैं कौन होता हूँ किसी के बारे में कोई ख्याल बनाने वाला ?······जो इस तरह मारा गया है, वह मैं भी हूँ और तुम भी।
(पिताजी का आना।)

पिताजी : कालीप्रसाद जैसा कायर······डरपोक······पुलिस ने शिनाख्त किया है, वह काली का ही आदमी था—हिस्ट्रीशीटर।

किशोर : मुझे डराना चाहा है। मेरे चारों ओर जो कुछ भी हो रहा है, सब के सेन्टर में मैं हूँ।

नरेश : (अचानक पुकार कर) भाभी जी, तीन कप गर्मागर्म काफी। यहाँ मामला बहुत सीरियस हो रहा है।

(अरुना का आना ।)

नरेश : नो टाक, भाभी । ओनली काफी ।

अरुना : सब लोग लेंगे ।

नरेश : बिल्कुल लेंगे । भाभी, इनके चेहरे देखिए, कितने सीरियस हैं......बाबूजी, आपको नहीं कह रहा हूँ—इसे कह रहा हूँ—अपने आप से कह रहा हूँ—पता नहीं क्यों, हम लोग नान-सीरियसली सीरियस लोग हैं । और सीरियसली नान-सीरियस हैं । पिताजी, कोई हँसी-खुशी की कहानी सुनाइए ।

पिताजी : तुम सुनाओ ।

नरेश : मैं तो सीरियस हूँ ।

(पिताजी की हंसी ।)

पिताजी : नहीं, तुम जो हो वही हो ।

नरेश : पिताजी, मेरी यह जो खोपड़ी है न, यह खाली है, मैं बी० ए० फर्स्ट इअर से आगे खिसक ही नहीं सका । मुझे ऐसा लगता है, पिताजी, ये दिन, ये क्षण, कामकाज, सारा संयोग, मात्र खिलौने हैं, इनसे खेल लो, बेटा, क्योंकि साले तुम खुद खेले जा रहे हो......सॉरी, पिताजी, मेरी ज़बान ज़रा लड़खड़ा जाती है, मैंने कोई किताब नहीं पढ़ी न । ज़िन्दगी साली ऐसी है कि......सॉरी, पिताजी, काफी ।

(अरुना का काफी लिये आना । नरेश सबको देता है)

नरेश : भाभी, हम फ़िफ़्टी-फ़िफ़्टी......

अरुना : और है न । (पुकारना ।) चमन ।

नरेश : नो, चमन। फ़िफ़्टी-फ़िफ़्टी में जो मज़ा है.....।
(खुद प्लेट में, अरुना को कप में। धीरे-धीरे प्रकाश बुझ कर किशोर के आफिस में प्रकाशित होता है। किशोर फाइलों के साथ। चमन खड़ा है। फोन।)

किशोर : (उठाकर) हूँ.....हाँ...ठीक है। (फोन रखकर) जाओ भेजो। भीतर कोई नहीं आये—फोन तक नहीं।
(चमन का जाना। मिस चन्द्रा का आना)

किशोर : आप हैं मिस चंद्रा ?

चंद्रा : इसके लिए आज फिर कोई सबूत चाहिए ?

किशोर : (देखते रह जाना।)

चंद्रा : पासपोर्ट के लिए अपना एक फोटो 'एटेस्ट' कराने आई थी, कई दिनों घर दफ्तर के चक्कर लगाने के बाद आपने गुस्से में कहा—क्या सबूत है कि यह आपका फोटो है मैंने कई सबूत दिये। एम॰ एल॰ ए॰ कालीप्रसाद, का पत्र दिया। तब आपने कहा–हो सकता है मिस चंद्रा नाम की कोई और लड़की रही हो, जिससे आपकी सूरत-शक्ल मिलती हो, उसकी जगह आप वही बन रही हों—'ए केस आफ इम्पोस्टर'। (रुक कर) आप अपनी ईमानदारी, उसूल, कानून-कायदे के लिए काफी जाने-माने जाते हैं......।

किशोर : 'डोन्ट वेस्ट माई टाइम।'

चंद्रा : यह आपका तकिया कलाम है।

किशोर : शायद आपको...।

चंद्रा : शायद, 'शायद' यही आपकी 'आईडेन्टिटी' है?

किशोर : मुझे आपसे सिर्फ एक बात पूछनी है।

चंद्रा : मुझे पता है आपके पास समय बिल्कुल नहीं होता। आप सिर्फ एक बात, अपने मतलब से मतलब रखते हैं, वह सिर्फ एक बात क्या पूछनी है, मुझे मालूम है। मैं उसे पूछने नहीं दूँगी। न उसका उत्तर दूँगी। क्या होती है मजबूरी एहसास कराने की कोशिश करूँगी।

किशोर : सुनो……।

चंद्रा : कुछ सुनने नहीं आयी हूँ। तुम्हारे पास सिर्फ, एक सवाल है : 'मैंने तुम्हारे साथ बलात्कार……।' कभी सोचा भी है, यह लैंग्वेज, यह स्त्री के शरीर, आत्मसम्मान पर कितनी बड़ी चोट है? स्त्री स्वयं जब किसी पुरुष पर यह आरोप लगाती है, तब उसकी मजबूरी की कोई सीमा हो सकती है? उसे पता है, अदालत में न्याय के लिए जाना उसकी 'मिज़री' और 'हारर' के फोकस को घुमा देना है। कभी एहसास किया है, पुरुष की भाषा में स्त्री नहीं बोलती।

किशोर : कौन हो तुम?

चंद्रा : असली मिस चन्द्रा की हत्या कर नकली मिस चन्द्रा। 'इम्पोस्टर'! मैं असली मिस चन्द्रा हूँ या नकली, तुम जरूर वही असली किशोर सिन्हा हो, जिसके बपचन का नाम मन्यू था, या उसकी हत्या कर तुम इम्पोस्टर किशोर सिन्हा हो?

किशोर : मन्यू नाम तुम्हें कैसे पता ?

चंद्रा : तुम मन्यू से कैसे मन्नू हो गये ?

किशोर : तुम रीना की बहन तो नहीं ?

चंद्रा : पासपोर्ट में फोटो एस्टेट कराने के लिए तब यह नाम लिया था, तब तुम बहरे थे ।

किशोर : तुम……रीना……।

चंद्रा : पासपोर्ट बन गया । इंग्लैण्ड भी हो आयी । लेकिन तुम्हारी बदतमीज़ी माफ़ नहीं कर सकी । रीना ने माफ़ किया । मैं माफ़ करने वाली नहीं—जो भी कीमत देनी पड़े । हाँ, अब करो सवाल ।

किशोर : (मौन ।)

चंद्रा : मैन आफ़ कैरेक्टर, आनेस्टी……जस्टिस । ये महज़ अल्फाज़ हैं—किताबी, रटे-रटाये ।

(जाने लगना ।)

किशोर : रुको ।

चंद्रा : कहिए ।

किशोर : तुमने यह क्यों किया ?

चंद्रा : तुमने वह क्यों किया ?

किशोर : होश में रहो ।

चंद्रा : वह तुम्हारी ड्यूटी है ।

किशोर : सुनो ।……मेरी ओर देखो । गलती किससे नहीं हो जाती ? इतनी ज़िम्मेदारियाँ, दौड़-धूप तरह-तरह की चिन्तायें । ज़िन्दगी की सारी बनावट

ऐसी है कि कहीं सुख नहीं है—जन्म, बचपना, पाना, छिपना, पढ़ाई-लिखाई, नौकरी-बीमारी, कोई अंत है ? लड़ाई का अंत भी यदि वही दुख है तो भूलना ही……।

चंद्रा : इस बकवास का मेरे ऊपर कोई असर नहीं।

किशोर : तुम्हारी बकवास का मेरे ऊपर पूरा असर हुआ है।

चंद्रा : उस ज़लालत के अलावा मेरे पास और कोई ताकत नहीं……।

किशोर : मुझे और चाहे जो सजा दे सकती हो।

चंद्रा : इतने ताकतवर होकर……।

किशोर : 'यस-मैन' कभी ताकतवर नहीं होता। मैं उसी दिन से……माँ की मृत्यु के बाद, उस दिन जब पिताजी ने कहा—'लोग मुझे क्या कहेंगे, बिना माँ के बर्बाद हो गया'……तब से सब कुछ 'ना' से 'हाँ' में बदल गया। बैड सन से गुड सन हो गया……नो मैन से 'यस मैन'……।

चंद्रा : बातूनी ज़लील !

किशोर : तुम चीख सकती हो। चिघाड़ मार कर रो सकती हो। मेरी चीख मर चुकी है। मैं रो नहीं सकता। 'हाँ' में जो कुछ है वही हूँ मैं। मेरे दो बच्चे हैं—उन्हें मैं अपने साथ नहीं रख सका—होस्टल में रहकर……।

चंद्रा : सच कह रहे हो ?

किशोर : (चुप)

चंद्रा : तुम सच नहीं बोल सकते ।
(विराम ।)

किशोर : वह कहाँ है ? कैसे हैं वो ?

चंद्रा : उसका नाम नहीं ले सकते ? उसका नाम......।

किशोर : नहीं ।......वह नाम नहीं, चिराग है । उसे ज़बान पर मत लाओ । चिराग को घर से बाहर निकालोगी तो इस तेज़ हवा में बुझ जायेगा......बुझेगा नहीं तो कम से कम डाँवाँडोल हो जायेगा ।

चंद्रा : काफी एक्टिंग कर लेते हैं ।
(विराम ।)

किशोर : तुम सच बोल लेती हो, बताओ इसके पीछे काली प्रसाद, मोहन दास......।

चंद्रा : इसमें किसका हाथ नहीं है ?
(बन्द दरवाजे पर दस्तक । कालीप्रसाद और चमन के बीच बोलचाल ।)

किशोर : कौन ? कौन है ?
(कालीप्रसाद का आना ।)

काली : नमस्ते, सर ।

किशोर : आप अभी......?

काली : क्या कहना चाहते हैं—अभी गिरफ़्तार नहीं हुआ ? या अभी लखनऊ नहीं गया ? आप से मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा, सरकार । क्योंकि मेरी ही तरह आप भी दुःखी हैं । बल्कि यूँ कहिए हम दोनों साइकिल के दो पहिये हैं—आप बूरोक्रेसी, मैं डोमोक्रेसी......। सरकार, आप ज़रा उधर चले

जाइए। वैसे न भी जाइए तो ···। आप सज्जन लोग हैं, अच्छा नहीं लगता।

(किशोर का जाना।)

काली : और क्या हाल-चाल है, चंद्रा ? सब ठीक-ठाक न ? साहब तो भले आदमी हैं, क्या सही है न ? बैठो·····बैठो न। लगता है, तब से खड़ी हो। वैसे खड़ा रहना तंदुरुस्ती के लिए···सुनो·····।

चंद्रा : कहिए।

काली : ऐसे बोलोगी, तो क्या बोलूँगा।

चंद्रा : बोलिए।

काली : कहीं बाहर चलें ?

चंद्रा : यही कहना था ?

काली : अरे तुम्हारा तो, मैं मार्क कर रहा हूँ, सारा रंग-ढंग ही बदला हुआ है। कोई खास बात?·····कुछ नहीं न, वही तो, ऐसे सज्जन साहब के साथ कुछ हो ही क्या सकता है। (रुक कर) खास बात यह है कि वह तेइस जून वाली बात में कोई दम नहीं है।

चंद्रा : क्या ?

काली : भला, ये कागज़ के आदमी क्या 'रेप'—बलात्कार कर सकते हैं। उससे तो 'प्राइमाफ़ेसी केस, ही नहीं बनता, माई डियर ! और सही वाकया यह है कि तुम तेइस जून को यहाँ इस शहर में क्या, इस डिस्ट्रिक में ही नहीं थीं। तुम पन्द्रह जून से तीस जून तक शिमला में थीं।

चंद्रा : मैं ? शिमला में ?

काली : बिक्रम के साथ।

चंद्रा : यह कौन है ?

काली : मोहनदास जी के सुपुत्र विक्रम कुमार दास—वी० के० दास।

(इस बीच किशोर आकर वहां उपस्थित हैं। चन्द्रा ने अपने-आप को कुर्सी के सहारे संभाल लिया है।)

काली : हिम्मत नहीं हारते। क्या आँखें बंद कर बैठ गयीं ? अरे जेलखानों में महिला कैदियों की हालत नहीं देखी है—सदके जावाँ (बलिहारी जाऊँ)······

किशोर : कालीप्रसाद जी।

काली : सरकार, माफ कीजिए······।

चंद्रा : देख लिया न ? वहाँ से यहाँ तक······।

काली : साहब का वक्त बरबाद मत करो।

चंद्रा : मैं कौन हूँ ? पहचाना नहीं ?

काली : अरे, उठो भी।

चंद्रा : (आक्रमण) जानवर।

(कुर्सी को हवा में रोक लेना।)

काली : इतना वजन मैं नहीं उठा सकता। खामखा लोग 'इमोशनल' हो जाते हैं।

(प्रकाश बुझना। संगीत। बंगले का वही कमरा।)

अरुना : बस करो तबियत खराब हो जायेगी। आज पूरे नौ दिन हो गये, तुम बंगले से बाहर नहीं निकले। कोई फोन कॉल रिसीव नहीं किया, किसी से मिलते नहीं, लोग क्या सोच रहे हैं। बाहर क्या

हो रहा है, इतनी सारी डाक आई पड़ी है। फाइलों का अम्बार बढ़ता चला जा रहा है। मुझसे भी नहीं बोलते। यह पी-पी कर......।

किशोर : कोई असर ही नहीं, क्या करूँ।

अरुना : डाक्टर बुलाती हूँ।

किशोर : प्लीज़ नहीं।

अरुना : तो ऐसे कैसे चलेगा।

किशोर : तुम्हीं कोई रास्ता बताओ।

अरुना : लेकिन तुम्हारा प्राब्लम क्या है ?

किशोर : 'आई एम ए रिसपांसिबिल मैन'......।

अरुना : चन्द्रा का लफड़ा भी खतम हो गया।

किशोर : देखो, मैं कितना सहता हूँ। मेरी खाल कितनी मोटी हो गयी। बताओ मैं औरों की तरह क्यों नहीं हो सका ? मैं हमेशा अपने खिलाफ़ क्यों ? व्यवस्था का पार्ट हूँ, पर व्यवस्था के खिलाफ़ क्यों हूँ ? खिलाफ़ हूँ, पर लड़ नहीं सकता। जानता हूँ—अकेला कोई नहीं लड़ सकता। मशीन का एक पुर्ज़ा या तो घिस जाता है, या उसे निकालकर उसकी जगह दूसरा फिट कर दिया जाता है।

अरुना : सर्विस में और लोग भी तो हैं ?

किशोर : 'वी कांट डिस्कस। वी स्टेट।'

अरुना : हमारे इतने नौकर-चाकर हैं। आस-पास इतने सारे लोग, वे क्या सोचते होंगे ?

किशोर : वे माने ?

अरुना : वे ।

किशोर : अदर दैन मी ? मैं नहीं, मेरे अलावा और……।

अरुना : प्लीज़ ।……मुझे और भी काम हैं ।

किशोर : यस……और भी काम……यह नहीं ।

(प्रकाश का बुझना । फिर वहीं प्रकाश में नरेश और रीता नांगलोई ।)

नरेश : रीता जी, आप बहुत फार्मल हैं, वरना आप से एक सवाल……सवाल नहीं, जिज्ञासा ।

रीता : ओह श्योर……पूछिए न ।

नरेश : आप दिल्ली के पास……नांगलोई की……।

रीता : जी नहीं, अब आपसे क्या पर्दा……'यू आर ए गुड मैन' ।

नरेश : थैंक्यू, मैडम, 'मैन' हूँ 'गुड बैड' मानता ही नहीं ।

रीता : अरे, 'गुड-बैड' कुछ है ही नहीं ? वंडरफुल !

नरेश : मेरा सवाल, रीता नांगलोई ……।

रीता : हाँ तो आप से क्या पर्दा । मेरे हसबैण्ड यहाँ ए० डी० एम० हैं । यह पाँडे हैं—आर० एस० पाँडे—राम सहाय पाँडे । अब बताइए भला यह भी कोई नाम हुआ—पाँडे…… पांड़े ……सिघाड़े । मैंने शादी के बाद ही फैसला कर लिया—'नथिंग डूइंग,…… पाँडे से नागलोई……उई…… उई……उई । (हंसी ।) देखिये आपसे कई मुलाकातें हुई एंड यू आर सो ओपेन माइंडेड…यू सी, मैं यह नहीं जान सकी—

'हू आर यू' ? मतलब आप क्या करते हैं ?

नरेश : काम करने से होने का ताल्लुक बहुत ही कम है, मैडम ।

रीता : वंडरफुल !

नरेश : देखिए न जैसे आप 'हाउसवाइफ़' हैं—हैं न ? यह तो हुआ आप का काम, मगर आप हैं, एन एक्ट्रेस……।

रीता : ओ, हाऊ स्वीट आफ़ यू !

(अरुना का आना ।)

नरेश : बधाई, भाभी जी ।

रीता : क्या बात है ?

नरेश : आज इनकी 'वेडिंग एनीवर्सरी' है ।

रीता : दैट आई नो……मैं अभी आई । एक्सक्यूज़ मी ।

(तेजी से जाना ।)

अरुना : देखिए न, सात बज गये, अब तक नहीं आये ।

नरेश : कोई मिनिस्टर आये हुए हैं ।

अरुना : सुना है इनका सारा मूड आफ़ है। या तो लड़ पड़ते हैं, या बिल्कुल चुप हो जाते हैं । भाई साहब, पहले इनका स्वभाव कैसा था ?

नरेश : बिल्कुल सरल और सहज ।

अरुना : विद्यार्थी जीवन में ?

नरेश : 'फुल आफ़ लाइफ़ ।' कविता करते थे, गाते थे, नाटक में पार्ट लेते थे ।

अरुना : रिअली ? हाँ, मुझसे कुछ कह तो रहे थे। नौकरी में आदमी बिज़ी बहुत हो जाता है।

नरेश : क्यों ?

अरुना : 'रिसपांसिबिलिटी' आ जाती है।

नरेश : नहीं, नौकरी में आकर लाइफ का पेट्रोल खत्म हो जाता है। लोग ऊपर से पेट्रोल डालकर गाड़ी स्टार्ट करना चाहते हैं।

अरुना : लाइफ़ का पेट्रोल क्या है ?

नरेश : लाइफ़ का पेट्रोल लाइफ़ है।

अरुना : ये आजकल बहुत उदास हैं। लड़ाई के मूड़ में जब तक थे, तब एक अजीब-सा थ्रिल आ गया था, पर जब से मिस चंद्रा का केस ख़त्म हुआ……। खैर, वह सब दफ़ा-रफ़ा हो गया, मगर ये तब से न जाने किस तरह टूट-से गये। देखा है, देखा था, मगर किशोर के इस रूप को मैंने पहले कभी नहीं देखा था। ये बात मैं सिर्फ आपसे कर रही हूँ……।

नरेश : ये बात आप किशोर से क्यों नहीं करतीं।

अरुना : वह, और मुझसे बात ! ……बाबा……!

नरेश : करके देखिए।

अरुना : देख लिया है।

नरेश : भाभी, यही वह अदृश्य खाई है, जहाँ एक बार गाड़ी गिरी कि निकल नहीं पाती—चाहे कितने 'क्रेन' लगाओ—ब्यूटी पार्लर के, हैल्थ क्लब के—सब वलगैरिटी के अलावा और कुछ नहीं।

(सन्नाटा।)

अरुना : यह मिस चंद्रा कौन है ?

नरेश : आज आपकी 'वेडिंग एनीवर्सरी' है।

अरुना : डोंट वरी, कोई मेहमान नहीं आयेगा। किशोर को कतई पसंद नहीं। आपने मिसेज़ रीता नांग-लोई को बताकर……। भाई साहब, यह बताइए किशोर का 'वीकनेस' क्या है ?

नरेश : आपसे बेहतर और कौन जानता होगा।

अरुना : नो, ही इज़ वेरी स्ट्रांगहेडेड पर्सन।

नरेश : कोई कमज़ोरी है, तभी तो स्ट्रांगहेडेड हैं। (सहसा) लगता है किशोर आ गया।

अरुना : आपसे मिलते ही किस कदर बदल जाते हैं।

नरेश : ओरिजिनल !

अरुना : मुझे अकसर महसूस होता है, मैं किशोर के किसी दूसरे रूप से मिल रही हूँ।

नरेश : कोई आया है।

अरुना : ओफ़ ! वही मिसेज रीता नांगलोई। पास में ही बंगला है, मगर कार से आई हैं। आइए-आइए, रीता जी।

रीता : हार्टियेस्ट कान्ग्रेचुलेशन्स।

अरुना : धन्यवाद। यह क्या ?

रीता : आपके लिए। अभी मत खोलिए। साहब को भी आ जाने दीजिए।

अरुना : आपको पता था ?

रीता : जी हाँ, यस ।

अरुना : कैसे ? हमें यहाँ आये अभी एक साल भी नहीं हुआ ।

रीता : जब मैरेज हुई है, तब मैरेज की एनीवर्सरी तो नेचुरल है ।

(नरेश का हंसना ।)

नरेश : कितना दिलचस्प है ।

रीता : हाऊ नाइस आफ़ यू ।

अरुना : मिस्टर नरेश, उमेश, चैतन्य, दिनेश, इस समय आपको किस नाम से.....?

नरेश : दिनेश चलेगा ।

अरुना : कैसे ?

नरेश : अभी दिनेश की लिखी हुई आर्टिकल देखी है ।

अरुना : देखी है या पढ़ी है ?

नरेश : फुर्सत कहाँ है ।

अरुना : काम कहाँ है, पर फुर्सत नहीं है ।

नरेश : फुर्सत का ताल्लुक यहाँ से (दिमाग छूना) है ।

(किशोर का आना ।)

नरेश : अरे इस कदर चुपचाप आये कि.....। लगता है आज पैदल आ रहे हो ।

रीता : कान्ग्रेचुलेशन्स । बहुत-बहुत बधाई ।

किशोर : किस बात के लिए ?

रीता : ओह गाड ! आपकी शादी की सालगिरह। जाइए कपड़े बदल कर आइए। कब से हम इंतज़ार कर रहे हैं।

किशोर : लगता है, कोई प्रेज़ेंट ले आयी हैं। दीजिए…… अच्छा दिखा ही दीजिए।

रीता : नो, सर, कपड़े बदल कर आइए।

(जाना किशोर का, पीछे अरुना।)

रीता : तो मिस्टर आपके कितने सारे नाम हैं ?

नरेश : कई हैं ?

रीता : कितने ?

नरेश : जो काम वो नाम। मसलन देखिए न, इस वक्त मेरा नाम संवादी लाल हो सकता है—हमारा संवाद हो रहा है।

रीता : व्हाट संवाद ?

नरेश : 'डायलाग'।

रीता : तो 'डायलाग' बोलिए न। आई डोंट लाइक हिन्डी।

नरेश : पसंद नहीं, या समझतीं नहीं ?

रीता : कोई और बात कीजिए न। आप फिलिम की बात कर रहे थे—एन एक्ट्रेस ! आप मज़ाक तो नहीं कर रहे थे ?

नरेश : मैं कभी मज़ाक नहीं करता।

रीता : आपने शादी क्यों नहीं की ?

नरेश : कोई और बात कीजिए।

(हंसना ।)

रीता : यू आर वेरी इंट्रेस्टिंग ।

नरेश : कोई और बात कीजिए ।

रीता : आप कीजिए ।

नरेश : नहीं, आप ।

रीता : पहले आप । मुहावरा बदल गया है ।

नरेश : कोई कहानी ?

रीता : फिल्म की ।

नरेश : आपको फिल्म इतनी पसन्द क्यों है ?

रीता : फिल्म से ऐसा लगता है—रज़ाई ओढ़कर सो जाना ।

(कुर्ता पायजामा पहने किशोर का आना ।)

रीता : आपके लिए यह 'प्रेज़ेन्ट' ।

किशोर : ओह कलम—फाउंटेन पैन ·····।

रीता : इम्पोर्टेड ।

(अरुना कोई कागज़ लिये आती है। दिखाना। नरेश से एकान्त में कुछ कहना ।)

किशोर : यह कागज़ कहाँ से मिला ?

अरुना : भीतर के पाकेट में ।

किशोर : तुम हर जगह टटोलती रहती हो ।

अरुना : थैंक्यू, मिसेज़ नांगलोई, हमें कहीं जाना है ।

(रीता को विदा करना ।)

नरेश : (पढ़कर) किशोर ने ठीक लिखा है।

अरुना : नानसेन्स।

नरेश : ऐसा इन्होंने सोचा है।

अरुना : सोचना खतरनाक है।

नरेश : भाभी, इसे इतना भी हक नहीं ?

अरुना : हक ? हक छोड़ देने के बाद हक बनता है।

किशोर : मैं नौकरी छोड़ने जा रहा हूँ—यह मेरा फैसला है।

अरुना : तुम ?

किशोर : हाँ, मैं।

अरुना : तुम अब 'मैं' नहीं हो। तुम रहे होगे तब, जब कुछ नहीं थे। बहुत हो गया, इस्टैब्लिशमेंट का पार्ट होते हुए ऐंटी-इस्टैब्लिशमेंट का ड्रामा करना। ट्रांसफर......हर साल ट्रांसफर......मेरी हड्डी टूट गयीं। मां-बाप होकर भी बिना अपने बच्चों के। मेहनती, ईमानदार, चरित्रवान होकर इस तरह की बदनामी। कहीं कोई सुरक्षित नहीं है, न बाहर न भीतर, न यहाँ न वहाँ। कहीं कोई अकेला नहीं लड़ सकता।

किशोर : 'इम्पोस्टर' ......धोखेबाज़ ......ढोंगी, धोखेबाज़। मेरी आदत। मेरी नौकरी। मैं हूँ, तब भी कोई फर्क नहीं, नहीं, तब भी नहीं। सब को मेरी ज़रूरत है, पर किसी को भी मेरी ज़रूरत नहीं। मैं अपने, तुम सबके आइने में देख रहा हूँ...... अपना पात्र......पात्र में अपना चरित्र। चरित्र के

इस दोगलेपन की बीमारी की कोई दवा है क्या ? यह रोग मेरे अस्तित्व में है। इसी में से मेरी पैदाइश है। मैं सब रोगों से मुक्त हो सकता हूँ, अपने आप से रोग-मुक्त होने का……। (नरेश को पकड़ना चाहा है, अरुना को छूना, पर जैसे संभव नहीं है।)……बेतरह पिटा हुआ, अपमानित, डरा, घर के किसी कोने में खड़ा हुआ बच्चा किसी खामोशी के हाथ सुपुर्द कर दिया जाता है। जियो। काम करो, ज़िम्मेदारी निबाहो। पर कैसे जीना, क्या करना, किसका निर्वाह करना ? (चीखना) मैं 'क्लोनियल' औपनिवेशिक जानवर जन्तु, (खामोशी) कब तक ? बोलो।……चुप क्यों हो ? चुप रहने की ढोंगी भूमिका मेरी है। यह कथा सुनी है ? एक आदमी बारिश से बचने के लिए नदी में कूद पड़ता है।

अरुना : रुको, दवा ले आती हूँ।

(रोक कर)

किशोर : नहीं, यहाँ से चला जाना चाहता हूँ।

अरुना : कहाँ ?

किशोर : शायद कहीं, कोई ऐसी जगह बची हो।

अरुना : बाहर कोई आया है।

(जाती है।)

नरेश : किशोर……

किशोर : लोगों के साथ मेरे सम्बन्ध 'अनरिअल' हैं।

नरेश : किशोर……

किशोर : जिन्दगी में पहली बार किसी ने मुझे इतना विवश, पराजित किया······वही था, तुम भी उसे नहीं पहचान पाये ।

नरेश : हम दोनों एक ही पीढ़ी के हैं ।

किशोर : नये में कोई अन्तर आयेगा ?

नरेश : तुम बहुत सारे लोगों के बीच में अकेले हो । नयों में सारे लोग अकेले होंगे ।

किशोर : क्या होगा ?

नरेश : कुछ होगा ज़रूर ।

(अरुना का फोन लिए आना ।)

अरुना : लीजिए, आपका फोन—चीफ़ सेक्रेटरी ।

किशोर : जी, नमस्कार, सर । जी हाँ······जो······जी सुनिये तो······जो······जो······जो हाँ ।

अरुना : कान्ग्रेचुलेशन······कमिश्नर हो गए । मैं कहती थी न,······।

(संगीत चला देना ।)

किशोर : अरुना । अरुना ! नरेश······नरेश—नरेश······।

(अंधेरे में केवलसंगीत । प्रकाश धीरे-धीरे लौटता है—लोगों की हंसी—पार्टी का दृश्य । "माड" चुटकुले, "फोन" मजाक ।)

एक : पहली बात कहाँ रह जाती है ? बैकग्राउन्ड में चली जाती है । बात तो दूसरी ही चलती है । दूसरे नम्बर का पैसा······दूसरा एकाउन्ट······। दूसरी··

दूसरा : दूसरी बीवी ।

तीसरा : बीवी नहीं, "शी" ।

(दूसरी ओर)

एक : उस रात आप ही थे टेलीविज़न पर । चैतन्य आप ही हैं ?

नरेश : जी हाँ, अलग-अलग लोगों से अलग-अलग नामों से मिलता हूँ ।

(तीसरी ओर)

एक : बड़ा मिस्टीरियस आदमी है। कहता है—मैं काम नहीं करता काम कराता हूँ ।

दूसरा : मिस्टर किशोर का क्लासफैलो है ।

तीसरा : मिस चन्द्रा का "इस्कैंडल" वाह ! ।

चौथा : क्या चीज़ थी, यार !

अरुना : आप लोग कुछ खा-पी नहीं रहे हैं ।

लोग : कान्ग्रेचुलेशन्स, मैडम । बधाई ! मुबारक !

अरुना : थैंक्यू······धन्यवाद······शुक्रिया ।

(कालीप्रसाद का आना ।)

काली : नमस्कार······नमस्कार·········हालो, रीता जी । आपका स्वास्थ्य ठीक है न ?

रीता : हे ! अपनी मिसेज़ को नहीं लाये ?

काली : हम तो एक़ मैडम के चरणों के गुलाम हैं । कहिए जी, आप सब राजी खुशी ! हो हो हो······नरेश ······सुरेश······चैतन्य······वगैरह-वगैरह । आपके

मित्र कहाँ हैं—कमिश्नर साहब ?

अरुणा : बस आ रहे हैं।

काली : हम स्वतन्त्र भारत के निवासी हैं। फ्रीडम है हमें।

नरेश : हुजूर, माईबाप, फ्रीडम कहीं नहीं है। फ्रीडम एक 'वैलू' है, सपना है। सिर्फ पावर है पावर। तभी फ्रीडम और 'पावर' में सदा दुश्मनी रही है।

एक : भारतवर्ष को जो आज़ादी मिली है—वह ट्रांसफर आफ पावर है, ट्रांसफर आफ फ्रीडम नहीं ?

नरेश : फ्रीडम का तबादला नहीं होता।

काली : भाई एक गिलास, मेरा गला सूख गया। आप भी क्या आदमी हैं, एक चुटकुला सुनिये.....जिन्दगी की सच्चाई।

एक : लीजिए, गला सींच लीजिए।

काली : (एक घूंट में पीकर) आज से ठीक सोलह साल पहले की बात है। मैं हायर सैकेण्डरी की परीक्षा में तीन बार फेल होने का रिकार्ड कायम कर चुका था। बड़ी बेकारी, न स्कूल में जगह न घर में पनाह। दिन-रात मारा-मारा फिरना। थोड़ा और देना, भाई साहब। (एक सांस में पी लेना।) मंगलवार का दिन था, आज ही की तरह मैं सिनेमा के टिकट ब्लैक में बेचकर घर जा रहा था। देखा अचानक हनुमान मंदिर के पास वाले शराब के ठेके पर लोगों की भीड़ जमा है। मैं भी

तमाशबीन, वहाँ पहुँच गया। देखते-देखते वहाँ बलवा हो गया। पुलिस, लाठी चार्ज, आँसू गैस, फाइरिंग। मैं अपनी जान बचाने के लिए शराब की दुकान में जा छिपा। लोगों के साथ मैं भी गिरफ्तार होकर पुलिस थाने में पहुँच गया। सुबह होते-होते जनता की अपार भीड़ ने थाने को घेर लिया और अपने प्रिय नेता की रिहाई के नारे लगाने लगे। सभी लोग मेरे अदभुद साहस……।

एक : अदभुद नहीं……अद्‌भुत।

काली : अबे भूतनी के……जब मैं बोलता हूँ……तो जबान और जवानी मेरे पीछे-पीछे ! मैं क्या कह रहा था ?

दूसरा : अदभुद।

काली : मेरे अदभुद साहस और पराक्रम…… जनता जनार्दन ने मुझे क्या से क्या बना डाला। जमीन से उठाकर आसमान पर……।

(ज़मीन पर लेटकर सबको प्रणाम।)

नरेश : उठिए…… उठिए, कालीप्रसाद जी।

काली : क्या साहब आ गये ?

नरेश : आ रहे हैं।

काली : सही आदमी को चुप कराने का एक ही उपाय है—उसे तरक्की दे दो।

(थ्री-पीस सूट में किशोर का आना। सबका चुप हो जाना।)

किशोर : लोग चुप क्यों हो गये ? आप लोग बोलते क्यों नहीं ? पिताजी कहाँ हैं ? वह मेरे साथ आ रहे थे। कहाँ रह गये ? पिताजी ! नरेश, यह क्या हो गया ?

नरेश : लोग आपस में बातें कर रहे हैं।

(लोगों का निःशब्द बातें करना।)

किशोर : लोग मुझसे क्यों नहीं बोल रहे हैं ? पिताजी, आइए न। ये लोग ?

नरेश : शायद आपके आने में थोड़ी देर हो गयी।

किशोर : आई एम सॉरी।

नरेश : कालीप्रसाद जी, कुछ बोलिए। साहब आ गये हैं।

किशोर : यह मेरा दोस्त नरेश है......।

नरेश : कुछ न होता तो खुदा होता......

(लोगों के पास जा-जाकर)

किशोर : इनसे मिलिए। यह......।

नरेश : कद्दू हैं, इलाहाबादी ! जौनपुरी मूली !

किशोर : यार, मुझे क्यों नहीं......।

नरेश : बोलने देते। बोलती अब बंद। बंदगोभी होती है न......।

किशोर : नरेश !

नरेश : पिताजी कहाँ हैं, अरुना भाभी ?

किशोर : आप लोग, खाते-पीते ही रहेंगे कि कुछ बोलेंगे ? जी हाँ, देरी हो गयी। फोन आ गया। कुछ

बोलिए। जी हाँ, आप लोग आये, बड़ी मेहरबानी की। बोलिए मैं क्या कर सकता हूँ ?

(दो लोग रिबन पकड़े खड़े होते हैं। रीता प्लेट में कैंची लिए आती हैं। कालीप्रसाद का इशारा। किशोर का रिबन काटना।)

किशोर : थैंक्यू। थैंक्यू वेरी मच।

(लोगों का बातें करना, हँसना, मजाक, किशोर का लोगों से घिरते जाना। नरेश सबसे अलग।)

नरेश : मुबारक हो, 'सॉरी' से 'थैंक्यू' तक का सफर ! मुबारक……।

(सबका हँसते-बोलते जाना। अकेले किशोर। भीतर से छड़ी लिये पिताजी का आना।)

पिताजी : मन्यू।

किशोर : मन्यू नहीं, मन्नू।

पिताजी : उदास मत हो, और कमज़ोर हो जाओगे। इतने निर्बल हो ? मैं ज़िम्मेदार हूँ। निराशा तुम्हें भीतर से तोड़ती चली जायेगी। यह दुनिया भीतर से बड़ी ठोस है। लो यह छड़ी, मार-मार कर मेरी खाल उधेड़ लो, क्रोध पैदा हो जाए, मुझ से मुक्त होकर चल पड़ो। मारो !

(किशोर छड़ी लेकर पिताजी पर प्रहार करना चाहता है, पर कर नहीं पाता।)

(पर्दा गिरता है।)



PITAMBAR PUBLISHING COMPANY PPC

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी